भारतीय लोकतंत्र के प्रतीक

ज़ाकिर हुसैन

प्रकाशन विभाग
सूचना और प्रसारण मंत्रालय
भारत सरकार

जीवन परिचय

ज़ाकिर हुसैन का जन्म एक अत्यन्त धार्मिक अफरीदी पठान परिवार मे हुआ था। यह परिवार 18वी शताब्दी के प्रारम्भ में उत्तर प्रदेश के फर्रुखाबाद जिले के कायमगज कस्बे मे आकर बस गया। इस खानदान के लोग पीढ़ी दर पीढ़ी सिपाहीगीरी करते आ रहे थे। ज़ाकिर हुसैन के पिता ने इस परम्परा को तोड़ा। उन्होने वकालत पढी और हैदराबाद जाकर वकालत शुरू की। इस पेशे मे उन्होंने काफी नाम कमाया। हैदराबाद मे 8 फरवरी 1897 को बालक ज़ाकिर हुसैन का जन्म हुआ, जो सात बच्चो मे तीसरा था। उच्चवर्गीय परिवार में जिस शान शौक्त के साथ बालक का लालन-पालन होता है, उसी शान शौकत के साथ ज़ाकिर हुसैन का भी लालन-पालन हुआ और उन्हे पढ़ाने को अग्रेज अध्यापक रखा गया। लेकिन जब वह मात्र नौ वर्ष के थे, उनके पिता की मृत्यु हो गई। पिताजी की मृत्यु हो जाने पर उन्हें अपने पैतृक निवास स्थान, अपने तीन भाइयो के साथ, लौट आना पड़ा। वह इस्लामिया हाई स्कूल, इटावा के होस्टल मे दाखिल हुए।

इटावा में पढ़ते समय उस वक्त की सार्वजनिक हलचल का उन पर गहरा असर पड़ा। उन दिनों तुर्की के खिलाफ इटली ने त्रिपोली की लड़ाई छेड़ रखी थी। भारतीय मुसलमानो की सहानुभूति तुर्कों के साथ थी। हमलावरो के अत्याचारो से पीड़ित लोगो के लिए कुछ करने को बालक ज़ाकिर हुसैन का मन मचलने लगा। वह जगह-जगह जाकर भाषण देने लगे और अपने बहुत से दोस्तो को इस बात पर राजी करने मे सफल हो गए कि वे गोश्त खाना छोड़ दें और उस पैसे को तुर्कों की सहायता के लिए दान में दें।

1911 में प्लेग का भयंकर प्रकोप हुआ और उसमे उनकी माता चल बसी। वह एक चरित्रवान व दृढ़ निश्चयी महिला थीं और ज़ाकिर हुसैन पर उनका बहुत गहरा प्रभाव पड़ा। ज़ाकिर हुसैन मे जो एक अविचल दृढ़ता व उद्देश्य के प्रति लगन थी, वह उन्हें अपनी माताजी से विरासत मे मिली थी।

माताजी की मृत्यु के कुछ ही दिनों बाद, एक विलक्षण व्यक्ति, सूफी हसनशाह का प्रभाव उनके ऊपर पड़ा। हसनशाह ने उनमें महानता के बीज पहचाने, और उनमें धीरज और लगन के साथ अपने मकसद के लिए ही काम करने की आदत डाली। इस उदार हृदय संत ने अपने माथे पर एक बार हिन्दुओं का तिलक लगाया था और कश्मीर से हैदराबाद तक पैदल यात्रा की थी। इनसे ज़ाकिर हुसैन ने दुनियावी सफलता की ओर से विरक्ति, सभी धर्मों की एकता का पाठ पढ़ा था और जीवनपर्यन्त पुस्तकों के लिए प्रेम प्राप्त किया था।

स्कूली शिक्षा के बाद ज़ाकिर हुसैन मुस्लिम एंग्लो ओरियंटल कालेज (अब अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय) में पढ़ने गए। वहां का वातावरण बिल्कुल भिन्न था। इस कालेज में विद्यार्थियों को सभ्य और सुसंस्कृत बनाने पर विशेष जोर दिया जाता था। अपनी बुद्धि और हाज़िरजवाबी के कारण ज़ाकिर हुसैन जल्दी ही एक बहुत अच्छे वक्ता के रूप में प्रसिद्ध हो गए। उनसे बातचीत में लोगों को बहुत मजा आता था। अपने आकर्षक व्यक्तित्व और हमदर्दी के कारण वह कालेज में बड़े लोकप्रिय थे। ज़ाकिर हुसैन ने अलीगढ़ में बहुत से अच्छे दोस्त बनाए और यहीं उनमें जिन्दगी की ऊंची बातों की ओर रुझान पैदा हुआ।

उनके जीवन में परिवर्तन अक्टूबर 1920 में आया जब महात्मा गांधी छात्रों का असहयोग आन्दोलन के लिए आह्वान करने के लिए अलीगढ़ आए। उस समय ज़ाकिर हुसैन केवल 23 वर्ष के थे और एम०ए० कक्षा के विद्यार्थी थे। वह वर्तमान शिक्षा के खोखलेपन और दाकियानूसी वातावरण से बहुत विरक्त थे। उन्हें गांधीजी जैसे ही महापुरुष का इन्तजार था, जो उनका मार्गदर्शन कर सके। कालेज के यूनियन हाल में आयोजित विद्यार्थियों और अध्यापकों की सभा में गांधीजी ने कहा कि भारतीयों को ब्रिटिश सरकार के नियन्त्रण में चल रही शिक्षा संस्थाओं का बहिष्कार करना चाहिए तथा उनके स्थान पर राष्ट्रीय शिक्षा संस्थाओं की स्थापना करनी चाहिए। महात्माजी के इस आह्वान पर जो छात्र उनके साथ हो लिए उनमें ज़ाकिर हुसैन भी थे। विद्यार्थियों और अध्यापकों के इस छोटे से दल ने 29 अक्टूबर को कालेज का बहिष्कार किया और राष्ट्रीय संस्था जामिया मिलिया इस्लामिया (नेशनल मुस्लिम यूनिवर्सिटी) की स्थापना की।

इस समय से ज़ाकिर हुसैन का जीवन समाज की सेवा और शिक्षा की प्रगति के लिए पूर्णरूपेण समर्पित हो गया। इसी समय से दिल और दिमाग, दोनों तरह से वह गांधीजी के साथ बंध गए। डा० ज़ाकिर हुसैन ने कहा था, "मैंने अपना सार्वजनिक जीवन गांधीजी के चरणों में बैठकर शुरू किया और वह मेरे मार्गदर्शक तथा प्रेरक रहे हैं।" उन्होंने गांधीजी की शिक्षा और अपने आदर्श, दोनों का इन शब्दों में वर्णन किया, "व्यक्तिगत और सामाजिक दोनों ही क्षेत्रों में शुद्ध जीवन बिताना, दुर्बलों और पददलितों के लिए सक्रिय और सतत सहानुभूति रखना, भारत के विभिन्न वर्गों में एकता स्थापित करना।" शिक्षा और जन सेवा के क्षेत्र में जो सफलताएं ज़ाकिर हुसैन को मिलीं, वे इन्हीं आदर्शों से प्रेरित थीं।

नव स्थापित जामिया मिलिया में दो वर्षों तक अध्यापन कार्य करने के बाद ज़ाकिर हुसैन में आगे पढ़ने की इच्छा जगी। ज़ाकिर हुसैन ने ब्रिटेन के किसी विश्वविद्यालय में जाना पसन्द नहीं किया, जहां उन दिनों ऊंचे घराने के भारतीय जाया करते थे। 1922 के अन्त में वह केवल इंग्लैंड का पासपोर्ट बनवाकर भारत से विदा हुए। किन्तु जहाज जब इटली पहुंचा तो उन्होंने इरादा बदल दिया। वह जर्मनी पहुंच गए जहां अध्ययन के लिए तीन सप्ताह रहने की इजाजत प्राप्त कर ली। किन्तु ये तीन सप्ताह तीन सालों में बदल गए।

ज़ाकिर हुसैन ने बर्लिन विश्वविद्यालय से शोध प्रबन्ध लिखकर अर्थशास्त्र में पीएच०डी० की डिग्री प्राप्त की। उनके शोध प्रबन्ध की परीक्षकों ने बड़ी प्रशंसा की। परन्तु ज़ाकिर हुसैन केवल किताबों के कीड़े न थे। यूरोप की तत्कालीन सामाजिक और बौद्धिक सरगर्मी से वह बहुत प्रभावित हुए; ख़ास कर वहां के समाज विज्ञान और शिक्षा के नए विचारों ने उन्हें बहुत आकर्षित किया। वहां रहकर ज़ाकिर हुसैन के दृष्टिकोण और विचारो में उदारता आई। वहां के समाजशास्त्र और शिक्षाशास्त्र के कुछ चिंतको से उनका परिचय हुआ। अपने मित्र संगीतज्ञ ब्रूनो वाल्टर के माध्यम से वह इन लोगों से मिले। उन्होने स्कैंडिनेविया के देशों का भी भ्रमण किया। यात्रा का खर्च चलाने के लिए उन्होंने महात्मा गाधी पर लेख लिखे और भाषण दिए। खुशखत में शुरू से उनकी विशेष रुचि थी। इस रुचि की वजह से ही उन्होने कम्पोजिंग सीखी और ग़ालिब के दीवान का बहुत सुन्दर संस्करण निकाला।

बर्लिन स्थित प्रतिभाशाली भारतीयो के ज़ाकिर हुसैन नेता बन गए। उनके कमरे में अकसर बैठक जमती थी और राजनीति, शिक्षा, संगीत, कला, दर्शन पर विचार-विनिमय होता था। जर्मनी के अपने मित्रों और अध्यापकों की प्रेरणा से उनमें यूरोपीय कला, साहित्य और संगीत के प्रति गहरा प्रेम, उत्कट ज्ञान पिपासा और जीवन के प्रति बुद्धिवादी दृष्टिकोण उत्पन्न हुआ। जर्मनी में इस अध्ययन और विचार मंथन से ही शिक्षा के विषय में उनके विचारों का विकास हुआ।

1924 में जब वह जर्मनी मे थे, उन्हें मालूम हुआ कि जामिया मिलिया को चलाने वाले लोग, धन की कमी के कारण संस्था को बद करने की सोच रहे हैं। उन्होने तुरन्त तार भेजा, "मैं और यूरोप में मेरे कुछ साथियो ने जामिया को अपना जीवन अर्पित करने का फैसला किया है। जब तक हम भारत आ नही जाते तब तक इस सस्था को बंद न किया जाए।" फलस्वरूप संस्था को बंद करने की कार्रवाई रोक दी गई और 1925 मे गांधीजी की सलाह पर जामिया को अलीगढ़ से दिल्ली लाया गया।

स्वदेश लौटने पर ज़ाकिर हुसैन और उनके दोस्तों ने जामिया मिलिया को काफी बुरी हालत में पाया। इसकी सारी गतिविधियों में मंदी आ गई थी और अलीगढ़ से दिल्ली आने में इसकी सारी व्यवस्था अस्त-व्यस्त हो गई थी। उस समय की इसकी स्थिति का वर्णन एक कार्यकर्ता ने इन शब्दो में किया है, "सस्था के पास पैसा बिल्कुल न था, हिन्दुस्तान के किसी भी तबके का सहयोग इसे नहीं मिल रहा था और इसके सामने कोई भविष्य नही था।"

जब ज़ाकिर हुसैन जामिया मिलिया के कुलपति बने, उस समय उनकी अवस्था केवल 29 वर्ष की थी। अपने कर्मठ स्वभाव के अनुसार वह जी-जान से अपनी इस प्यारी संस्था को अपने पैरों पर खड़ा कर देने में लग गए। इस भारी कार्य में असाधारण लगन, धीरज और आत्मसमर्पण की आवश्यकता थी। ज़ाकिर हुसैन और उनके बहुत से दोस्त जो बर्लिन, आक्सफोर्ड और कैम्ब्रिज के स्नातक थे, जामिया के उत्थान मे जी-जान से जुट गए। उन्होंने नेशनल एजुकेशन सोसाइटी नाम की एक संस्था बनाई, जिसका प्रत्येक सदस्य

यह शपथ लेता था कि वह कम से कम 20 वर्ष तक बिना किसी पारिश्रमिक या वेतन की आकांक्षा किए जामिया की सेवा करता रहेगा। शुरू में डा० ज़ाकिर हुसैन को 300 रुपये मासिक मिलते थे। संस्था में धन की कमी थी इसलिए उन्होंने स्वयं अपना पारिश्रमिक घटाकर 200 रुपया कर दिया। फिर घटाकर 150 रुपये कर दिया, और आगे भी घटाते गए।

नए तालीमी प्रयोगों के संस्थान के रूप में जामिया को प्रतिष्ठित करने में ज़ाकिर हुसैन को अधिक समय नहीं लगा। उनकी दृष्टि में अंग्रेजी शिक्षा की प्रचलित पद्धति निहायत संकीर्ण, घिसी पिटी और बेजान थी। जामिया में उन्होंने एक नई शिक्षा पद्धति चलाने का प्रयत्न किया, जिसकी जड़ें राष्ट्रीय संस्कृति में गहराई के साथ जमी हुई थीं। इस प्रयोग में बड़े साहस और कल्पना की जरूरत थी। जामिया देश की पहली शिक्षा संस्थाओं में थी जहां शिक्षा की प्रोजेक्ट पद्धति अपनाई गई, और जीवन तथा शिक्षा दोनों क्षेत्रों में सामाजिक दृष्टिकोण अपनाने, छात्रों को अच्छा नागरिक बनाने और उनमें कला तथा सौन्दर्य में रुचि पैदा करने के लिए व्यावहारिक शिक्षा पद्धति पर ज़ोर दिया गया।

ज़ाकिर हुसैन ने जामिया मिलिया को राजनीति से अलग रखते हुए भी इसे देश की आजादी के आन्दोलन की राष्ट्रीय भावनाओं से ओत-प्रोत रखने का प्रयत्न किया। उन्होंने एक जगह लिखा है, "जहां तक आजादी की लड़ाई में जामिया के हिस्सा लेने का सवाल है, मैं बता देना चाहता हूं कि यह आजादी के योद्धाओं को तैयार करने लगी थी।" राष्ट्रीय आन्दोलन के नेताओं ने इस दृष्टिकोण की प्रशंसा की। जवाहरलाल नेहरू और मौलाना अबुलकलाम आज़ाद जो डा० ज़ाकिर हुसैन की बुद्धि, निष्ठा और आदर्श के कायल थे, जामिया मिलिया की प्रबन्ध कमेटी मे थे। गांधीजी ने अपने सबसे छोटे लड़के देवदास को जामिया मिलिया में पढ़ाने और साथ ही खुद भी पढ़ने के लिए भेजा। गांधीजी के मन में जामिया और उसके कुलपति के लिए विशेष स्नेह और सम्मान था।

लगभग 30 वर्षों तक ज़ाकिर हुसैन जामिया मिलिया के कुलपति रहे और उन्होंने ऐसी परिस्थितियों में काम किया जो किसी भी कम हिम्मत और लगन वाले व्यक्ति को निरुत्साहित कर देतीं। उनके संरक्षण में जामिया मिलिया संस्कृति और ज्ञान के एक विशिष्ट केन्द्र के रूप में प्रतिष्ठित हो गया। ज्यों-ज्यों इसे प्रसिद्धि मिलती गई, त्यों-त्यों इसकी आर्थिक स्थिति भी दृढ़ होती गई। ओखला में सुन्दर इमारतें खड़ी हो गई। यहां के वातावरण में सुन्दरता और सफाई का अनोखा मेल था। ज़ाकिर हुसैन के लिए ये कड़ी मेहनत और तपस्या के दिन बहुत प्रसन्नता के भी दिन थे। कठिनाइयों में अविचल रहकर मुस्कराने की कला उन्हें आती थी। उनका दार्शनिक मनस्वी स्वभाव कठिनाइयों में उनके मनोबल को सदा ऊंचा रखता था। जीवन के प्रति उनका गहरा लगाव और प्रेम, उन्हें कठिन से कठिन परिस्थितियों में भी विचलित नहीं होने देता था। उनका यह प्रेम केवल मानव जाति तक ही सीमित नहीं था, बल्कि उसकी सीमा में पशु, फूल और फोसिल भी आते थे। यदि शिक्षा उनके जीवन का प्रिय कार्य था, तो बागवानी उनका शौक था। वह

जानते थे कि एक पौधे को भी उतने स्नेह और देख-भाल की जरूरत है जितनी एक बच्चे को। जामिया मिलिया के लान, उसकी झाड़ियां, फूलों के पौधे और अलीगढ़ विश्वविद्यालय के बाग तथा राष्ट्रपति भवन का मुगल उद्यान, उनके प्रेम और उनके परिश्रम के साक्षी हैं।

अपने काम, शौक और बाल-बच्चों व गृहस्थी से जो कुछ भी समय बचता था उसमें वह लिखते थे। उनका परिवार कोई बहुत छोटा नहीं था—उनकी पत्नी शाहजहां बेगम, उनकी दो पुत्रियां और सात पोते-पोतियां। उन्होंने थोड़ा लिखा और बहुत कम कहा; किन्तु जो कुछ भी लिखा या कहा, उसमें अधिक से अधिक विचार और गांभीर्य भरा है—गागर में सागर की तरह।

उनका पहला महत्वपूर्ण ग्रन्थ प्लेटो के 'रिपब्लिक' का उर्दू में अनुवाद है जो उनकी बौद्धिक रुचि का प्रतीक है। ऐसा प्रतीत होता है कि उनके जीवन में जो एक उच्च आदर्शवादिता, उदार विचारशीलता और मीमांसा तथा तर्क के लिए जो अगाध प्रेम हमें दिखाई पड़ता है, इसकी प्रेरणा बहुत अंश में उन्हें इसी यूनानी विचारक से प्राप्त हुई। इसके बाद उन्होंने अर्थशास्त्र की कई पश्चिमी किताबों का उर्दू में अनुवाद किया।

इन सबके अलावा ज़ाकिर हुसैन की जो सबसे मौलिक और अच्छी कृति कही जा सकती है वह है, बच्चों के लिए मनोरंजक और सरल शैली में लिखी उनकी कहानियां। उनको सबसे ज्यादा आनन्द इन्हीं रचनाओं में आता था। उनकी प्रायः सारी कहानियां नैतिक शिक्षा से भरी हैं। उन्हें उन्होंने पयामे तालीम (जामिया की पत्रिका) के लिए छद्म नाम से लिखा था। बाद को ये कहानियां इकट्ठी की गईं और उनके अपने नाम से 'अब्बू खान की बकरी' शीर्षक से प्रकाशित की गईं। उनके नजदीकी मित्र श्री सतीश गुजराल ने इस पुस्तक के लिए चित्र बनाए हैं।

ज़ाकिर साहब ने पहली मुहब्बत जामिया मिलिया से की थी और उनका यह प्रेम जीवन भर बना रहा। शिक्षा के प्रति उनका प्रेम, शीघ्र ही उन्हें राष्ट्रीय शिक्षा के वृहद क्षेत्र में ले आया और वह एक ऐसी शिक्षा योजना बनाने में, जो हमारे देश की परिस्थितियों के अनुकूल हो, गांधीजी के निकटतम सहयोगियों में हो गए। शिक्षा का एक कार्यक्रम बनाना था, जिसमें शिल्प पर अधिक जोर दिया जाए और जो अधिक रचनात्मक हो। साथ ही जो बाहरी सहायता पर निर्भर न रहे और अपना पूरा नहीं तो काफी खर्च खुद निकाल सके। यह योजना बुनियादी तालीम के नाम से प्रसिद्ध हुई।

1937 में जब भारत के प्रान्तों में पहली बार चुने हुए मंत्रिमंडल बने तो गांधीजी ने उनसे इस बुनियादी तालीम (शिक्षा) को अपनाने को कहा। गांधीजी ने डा० ज़ाकिर हुसैन को 'बुनियादी शिक्षा' की राष्ट्रीय समिति की अध्यक्षता करने को निमंत्रित किया। इस समिति को इस नई शिक्षा योजना का खाका बनाना था। डा० हुसैन ने नई शिक्षा नीति की जो संतुलित व्याख्या प्रस्तुत की, उससे इस योजना के अन्यभक्तों के साथ ही साथ रूढ़िवादी विरोधियों को भी, अपना दृष्टिकोण बदलने में सहायता मिली।

देश का विभाजन हुआ। स्वतन्त्र भारत के शिक्षा मन्त्री मौलाना आजाद ने ज़ाकिर हुसैन से अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय के वाइस चांसलर पद को सम्हालने की प्रार्थना की। अलीगढ़ प्रारम्भ से ही पृथकतावादी मुस्लिम राजनीति का केन्द्र रहा था और यहां से अनेक छात्र व अध्यापक पाकिस्तान चले गए थे। परिणामतः कुछ क्षेत्रों से यह सुझाव आ रहा था कि यह विश्वविद्यालय बन्द कर दिया जाए। सन् 1948 के प्रारम्भ में डा० हुसैन इस संस्था को स्वतन्त्र भारत के स्वस्थ वातावरण के अनुरूप ढालने के लिए अलीगढ़ पहुंचे, जहां से वह तीन दशक पूर्व असहयोग करके निकल आए थे। अलीगढ़ में भी उन्होंने वही रीति-नीति अपनाई, जो जामिया मिलिया में अपना कमाल दिखा चुकी थी। अन्ततः ज़ाकिर साहब की जीत हुई और इस संस्थान ने, जिसमें कि ज़ाकिर साहब ने स्वयं भी शिक्षा पाई थी, शीघ्र ही वह शक्ति एवं सम्मान प्राप्त कर लिया जो कि यह काफी दिनों से चली आ रही पृथकतावादी राजनीति की दूषित मनोवृत्ति के कारण खो चुका था।

अभी वह अलीगढ़ ही में थे कि उनके मित्र व प्रशंसक जवाहरलाल नेहरू ने उन्हें राजनीति के क्षेत्र में खींच लिया। 55 वर्ष की अवस्था में वह, साहित्य, कला, विज्ञान और समाजसेवा के क्षेत्र में विशिष्ट कार्य करने वाले लोगों के लिए सुरक्षित स्थानों में से, राज्य सभा के सदस्य मनोनीत किए गए।

डा० ज़ाकिर हुसैन ने 1956 तक कुल मिलाकर आठ वर्ष अलीगढ़ विश्वविद्यालय के उपकुलपति पद पर कार्य किया। साथ ही वह राज्यसभा के सदस्य बने रहे। सन् 1957 में वह बिहार के राज्यपाल नियुक्त किए गए।

सन् 1962 में वह भारतीय गणराज्य के उप-राष्ट्रपति चुने गए। उसी वर्ष उन्हें राष्ट्र की महान सेवा के लिए देश के सर्वोच्च सम्मान 'भारत रत्न' से विभूषित किया गया।

पांच वर्ष तक उप-राष्ट्रपति का पद सुशोभित करने के बाद डा० ज़ाकिर हुसैन 9 मई, 1967 को देश के राष्ट्रपति निर्वाचित हुए और 13 मई, 1967 को उन्होंने राष्ट्रपति पद का कार्यभार संभाला।

डा० हुसैन के भारत के सर्वोच्च पद पर निर्वाचन का सारे संसार ने स्वागत किया और इसे भारत की धर्मनिरपेक्ष नीति की विजय व एक ऐसे व्यक्ति का सम्मान माना जो धर्मनिष्ठ मुसलमान होने के साथ भारतीय संस्कृति के सर्वोच्च तत्वों का प्रतीक भी था। राष्ट्रपति पद ग्रहण करने के बाद उनके भाषण के ये शब्द स्मरणीय हैं, "सारा भारत मेरा घर है और उसक लोग मेरा परिवार है। लोगों ने कुछ समय के लिए मुझे इस परिवार का कर्ता चुना है। मैं सच्ची लगन से इस घर को मजबूत और सुन्दर बनाने की कोशिश करूंगा ताकि वह मेरे महान देशवासियों का उपयुक्त घर हो जो कि एक सुन्दर जीवन के निर्माण के प्रेरणापूर्ण कार्य में लगे हुए हैं, जिसमें इन्साफ और खुशहाली का राज हो।"

डा० ज़ाकिर हुसैन स्वयं कभी भी राजनीति में न आते। वह इस विचार के थे कि राजनीति की पथरीली जमीन से नए राष्ट्र का पौधा नहीं निकल सकता; इसका जन्म नई शिक्षा व संस्कृति की उपजाऊ भूमि में ही हो सकता है। अपने को शिक्षक कहने में उनको गर्व होता था। राष्ट्रपति पद पर चुने जाने के बाद उन्होंने कहा, "यह एक महान सम्मान है, जो देशवासियों ने मुझ सरीखे साधारण शिक्षक को दिया है जिसने कि आज से तकरीबन सैंतालीस साल पहले, अपनी जिंदगी के बेहतरीन वर्ष देश की शिक्षा में लगा देने का फैसला किया था। मुझे ऐसा महसूस होता है कि इस प्रकार मेरे देश के लोगों ने यह माना है कि शिक्षा से ही देश ऊंचा उठ सकता है और यह राष्ट्र के लक्ष्यों को प्राप्त करने का मुख्य साधन है।"

उप-राष्ट्रपति और राष्ट्रपति के पद पर रहते हुए डा० ज़ाकिर हुसैन देश-विदेश में शिक्षा व संस्कृति की सेवा अनेक प्रकार से करते रहे। उन्होंने भारत का यूनेस्को में प्रतिनिधित्व किया और कुछ समय तक उसके कार्यकारी मंडल के भी सदस्य रहे। देश-विदेश में काफी घूमे और शिक्षा, अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग तथा विश्व शांति के बारे में अपने विचारों को जनता के सामने रखा।

उप-राष्ट्रपति होने के बाद सन् 1964 में उन्होंने अल्जीरिया, ट्यूनीशिया और मोरक्को, तीन देशों की यात्रा की। अगले वर्ष वह कुवैत, सऊदी अरब, युर्दान, तुर्की और ग्रीस की यात्रा पर गए। जुलाई 1966 में वह अफगानिस्तान गए, जहां उन्हें अपने प्रिय मित्र खान अब्दुल गफ्फार खां से मिलने का अवसर प्राप्त हुआ। इसी वर्ष अक्टूबर में वह थाईदेश, कम्बोडिया, सिंगापुर और मलयेशिया की सद्भावना यात्रा पर गए।

राष्ट्रपति के रूप में डा० ज़ाकिर हुसैन ने जून 1967 में कनाडा की यात्रा की। मई 1968 में वह हंगरी और यूगोस्लाविया गए। इसी वर्ष जुलाई में उन्होंने सोवियत संघ की यात्रा की। उनकी अन्तिम विदेश यात्रा अक्टूबर 1968 में नेपाल की थी।

राष्ट्रपति पद के भार और व्यस्तता के बावजूद कला के प्रति उनकी रुचि बनी रही। वह भारतीय व पाश्चात्य संगीत का रस लेते थे और शेक्सपीयर से लेकर सार्त्र और रूमी से लेकर इकबाल तक विविध लेखकों को पढ़ते थे। उन्हें गुलाब उगाने का बहुत शौक था। गुलाबों से उनके प्रेम के कारण सन् 1967 में गुलाब विशेषज्ञों ने गुलाब की एक नई किस्म का नाम उनके नाम पर 'ज़ाकिर हुसैन' रख दिया।

जब वह 1967 के मई माह में राष्ट्रपति भवन आए तो उनके निजी सामान में 1500 दुर्लभ चट्टानों और पत्थरों के टुकड़े, फोसिल, चित्रों, पुस्तकों और पाण्डुलिपियों का संग्रह था।

डा० ज़ाकिर हुसैन के गहरे अध्ययन तथा व्यापक ज्ञान से, सभी लोग—भारतीय व विदेशी, उच्च और निम्न वर्ग के लोग—जो उनके सम्पर्क में आए, प्रभावित हुए बिना न रह सके। परन्तु उनके ज्ञान से भी गहरा प्रभाव जो मित्रों और अजनबियों पर पड़ता था, वह था उनके व्यक्तित्व का आकर्षण और विनम्रता।

उनके एक निकट सहयोगी के शब्दों में, 'उनमें बेहद विनय और दूसरों के लिए गहरी हमदर्दी थी।' हृदय से वह जीवन भर शिक्षक रहे और शिक्षक होने के नाते उनका विश्वास था कि मनुष्य प्रकृति से भला होता है।

यह कोरा संयोग नहीं था कि भारत के तीनों राष्ट्रपति शिक्षक थे। डा० राजेन्द्र प्रसाद की शिक्षा दीक्षा एक वकील के रूप में हुई थी। पर बाद में जब वह स्वतन्त्रता आन्दोलन में कूद पड़े तो उन्होंने पटना के 'नेशनल कालेज' के प्रधानाध्यापक के रूप में कार्य किया और बिहार विद्यापीठ की स्थापना की। यह जामिया मिलिया के ही ढंग का राष्ट्रीय महाविद्यालय था। दूसरे राष्ट्रपति डा० राधाकृष्णन विश्वविख्यात शिक्षक थे। इस प्रकार राष्ट्रीय शिक्षा के अन्यतम प्रवर्तक डा० ज़ाकिर हुसैन के तृतीय राष्ट्रपति चुने जाने से अनोखी परम्परा कायम हुई।

पर दुर्भाग्यवश डा० ज़ाकिर हुसैन अपना कार्यकाल पूरा न कर सके। अचानक 3 मई, 1969 शनिवार दोपहर को उनकी जीवन लीला का अन्त हो गया।

आखिरी सांस तक देश का ध्यान

रोज की तरह राष्ट्रपति डा० ज़ाकिर हुसैन सवेरे उठे। इस समय वह राष्ट्रपति भवन के मुगल उद्यान में अपने प्रिय गुलाबों की क्यारी में टहला करते थे। मगर एक हफ्ते से उनका यह क्रम बन्द था। 26 अप्रैल को वह असम, नेफा और नागालैंड के पांच दिन के दौरे से लौटे थे। इस यात्रा के कारण उन्हें कुछ थकावट महसूस हुई और डाक्टरों ने उन्हें एक हफ्ते पूरा आराम करने की राय दी। इससे उन्हें फायदा हुआ और आशा थी कि रविवार से वह अपना नियमित कार्य करना शुरू कर देंगे।

शुक्रवार को आधी रात तक उनके कमरे की रोशनी जल रही थी और वह पढ़ने में मग्न थे। शनिवार को सवेरे उठने के बाद एक गिलास दूध लेकर उन्होंने सवा दस बजे के करीब कुछ कागजात देखे और बिस्तर पर लेट कर भारत की रक्षा समस्या पर एक नई पुस्तक को पढ़ने में लग गए।

ग्यारह बजे के करीब डाक्टर उनके नियमित परीक्षण के लिए आए। सवा ग्यारह बजे राष्ट्रपति महोदय उठे और गुसलखाने में गए। उनको निकलने में कुछ देर हुई तो उनके पुराने और वफादार सेवक इसहाक ने उनको आवाज दी। मगर कोई जवाब न मिला। उसने दरवाजा खटखटाया, फिर भी कोई जवाब नहीं मिला। इसहाक को कुछ चिन्ता हुई और वह गुसलखाने का दूसरा दरवाजा खोलकर अन्दर घुसा और यह देखकर स्तब्ध रह गया कि राष्ट्रपति महोदय धरती पर गिरे हुए हैं। उसने डाक्टरों को फौरन आवाज दी। डाक्टर दौड़े और उन्होंने अचेत राष्ट्रपति को उठाकर दीवान पर लिटा दिया। उनको होश में लाने के सारे उपाय किए गए। मगर सब बेकार रहे। अन्त में 11 बजकर 55 मिनट पर डाक्टरों ने घोषित कर दिया कि राष्ट्रपति डा० ज़ाकिर हुसैन नहीं रहे।

बात ही बात में पचास हजार आदमियों की भीड़ राष्ट्रपति भवन के विशाल प्रांगण में अपने नेता के अन्तिम दर्शनों के लिए इकट्ठी हो गई। जैसे जैसे खबर फैलती गई, शोकाकुल जनता की भीड़ बढ़ती गई। राष्ट्रपति का शव दरबार हाल में जनता के दर्शनार्थ लाया गया। मृत राष्ट्रपति के मुखमंडल पर वैसी ही शांति विराजमान थी जैसी जीवन काल में रहती थी। दरबार कक्ष धर्मग्रन्थों के उच्चारण से गूंज रहा था। कुरान शरीफ़, श्रीमद्भगवद्गीता, बाइबिल और गुरु ग्रन्थ साहब का पाठ हो रहा था। दो दिन तक मरहूम ज़ाकिर साहब के अन्तिम दर्शनों के लिए हर मजहब और हर वर्ग के नर-नारियों का तांता बंधा रहा।

सोमवार को 5 बजे सायं राष्ट्रपति डा० ज़ाकिर हुसैन की अन्तिम यात्रा आरम्भ हुई। राष्ट्रपति भवन से जामिया तक, जिसे मरहूम ज़ाकिर साहब ने अपने अन्तिम विश्राम स्थल के लिए चुना था, 8 मील लम्बे रास्ते पर दोनों तरफ हजारों लोग गीली आंखों से अपने नेता को अन्तिम विदाई दे रहे थे। शव यात्रा को जामिया तक पहुंचने में तीन घण्टे लगे।

राष्ट्रीय सलामी और नमाजे-जनाजा के बाद उनके शव को कब्र में सुला दिया गया। प्रधान मंत्री, उप-प्रधान मंत्री, प्रधान न्यायाधीश, लोकसभा के अध्यक्ष, विदेशी राजदूतों और राष्ट्रपति के बंधुओं ने उनकी कब्र में मिट्टी डाली। इस प्रकार भारत की एक महान संतान डा० ज़ाकिर हुसैन की मिट्टी की काया मिट्टी में मिल गई। मगर कब्र पर छिड़के हुए गुलाब जल और गुलाब के फूलों की तरह, उनके व्यक्तित्व की सुगन्ध हवा में व्याप्त हो गई।

शोकाकुल राष्ट्र को सम्बोधित करते हुए कार्यकारी राष्ट्रपति श्री वराहगिरि वेंकट गिरि ने दिवंगत नेता की देशभक्ति और आत्मत्याग की प्रशंसा करते हुए कहा, "डा० ज़ाकिर हुसैन हमारी संस्कृति के सर्वोत्तम तत्त्वों के प्रतिनिधि थे। वह सचमुच अजातशत्रु थे।"

श्री गिरि ने मरहूम राष्ट्रपति के राष्ट्रीय शिक्षा में महान योगदान की चर्चा करते हुए कहा, "हमारे देश की शिक्षा में क्रांति लाने के लिए इस महामानव और आदर्श अध्यापक ने जो काम किया, उसे कौन भूल सकता है? वह मानव मात्र की सेवा, उदारता और देशभक्ति में गांधीजी के सच्चे अनुयायी थे और उनका जीवन राष्ट्र की सेवा के लिए समर्पित था। देश के सांस्कृतिक उत्थान पर उनकी गहरी छाप पड़ी है।"

अन्त में श्री गिरि ने कहा, "वह सरकार और जनता के लिए शक्ति के स्तम्भ थे। हिन्दू, मुसलमान, ईसाई, सिख, पारसी, गरीब, अमीर, ऊंच, नीच—डाक्टर ज़ाकिर हुसैन सभी के प्रिय थे। हमारे मरहूम राष्ट्रपति ज़ाकिर हुसैन साहब नें देश की जो विविध सेवाएं कीं, वे हम सबको सदा प्रेरणा देती रहेंगी।"

प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी ने अपनी श्रद्धांजलि में कहा कि डा० ज़ाकिर हुसैन उस पीढ़ी के थे, जो महज स्वतन्त्रता संग्राम में शामिल होने से ही ऊंचे नहीं उठे। बल्कि अपने ऊंचे आदर्शों और लक्ष्यों के कारण प्रतिष्ठा के पात्र बने।

प्रधानमंत्री ने कहा, "दो वर्ष पहले, भारतीय जनता ने डा० ज़ाकिर हुसैन को अपना राष्ट्रपति चुनकर, अपने को गौरवान्वित किया था। इस थोड़े से अर्से में उन्होंने इस ऊंची पदवी की शोभा बढ़ाई। देश की एकता के मामले में, हम सब लोगों में वह सबसे आगे थे। उनके व्यक्तित्व में भारत की मिली जुली संस्कृति साकार हो उठी थी। उन्होंने अपने भाषण, अपनी कलम और अपनें कार्यों द्वारा राष्ट्रीय जीवन को ऊंचा उठाया। जिन आदर्शों पर वह चलते थे, जो रचनात्मक कार्य उन्होंने एक शिक्षक या समाजसेवी के नाते किया और जो आदर सम्मान उन्होंने राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्रों में पाया, वह आनेवाली पीढ़ियों को रास्ता दिखाएगा।"

प्रधानमन्त्री ने डा० ज़ाकिर हुसैन के इन ऐतिहासिक शब्दों को याद किया, जो उन्होंने राष्ट्रपति का पद ग्रहण करते हुए मई 1967 में कहे थे, "सारा भारत मेरा घर है और इसके लोग मेरा परिवार है।" प्रधानमन्त्री ने कहा, "आज यह परिवार और भारत उसके शोक में डूब गया है।"

उप-प्रधानमन्त्री श्री मोरारजी देसाई ने कहा, "डा० ज़ाकिर हुसैन ने धर्म-निरपेक्षता का जीता-जागता उदाहरण पेश करके देश की सबसे बड़ी सेवा की है। वह मानवतावादी थे, उन्हें मनुष्य जाति के भविष्य में विश्वास था और वह जीवन भर मनुष्य की उन्नति के लिए काम करते रहे। वह कभी भी पद और प्रतिष्ठा के पीछे नहीं भागे बल्कि ये स्वयं ही उनके पास आते रहे।"

श्री देसाई ने कहा, "वास्तव में उन्हें पठन-पाठन में अधिक आनन्द आता था, राजनीति के कोलाहल में नहीं। . . . फिर भी जब कभी पुकार आई उन्होंने देश की सेवा से मुंह न मोड़ा। डा० ज़ाकिर हुसैन ने चुनौतियों का सदा दृढ़तापूर्वक सामना किया। वास्तव में, भारत के महान गणराज्य के प्रधान होने की योग्यता उनसे बढ़कर किसी में नहीं थी। और उस पद से उन्होंने देश की महान सेवा की।"

उप-प्रधानमन्त्री ने आगे कहा "वह सच्चे धर्मनिष्ठ व्यक्ति थे। वह जात-पात, मज़हब, हर भेद भाव से ऊपर, सर्वोपरि सच्चे भारतीय थे। इन्सान कितना ऊंचा उठ सकता है, ज़ाकिर साहब इसकी मिसाल थे।"

पांच मई को भारतीय संसद ने शोक प्रकट करते हुए दिवंगत राष्ट्रपति के महान आदर्शों को आगे बढ़ाने का प्रण लिया। दोनों सदनों, लोकसभा व राज्यसभा, ने अलग अलग, शोकपूर्ण वातावरण में यह प्रस्ताव स्वीकार किया :—

लोकसभा/राज्यसभा इस राष्ट्रीय शोक की घड़ी में, भारत के राष्ट्रपति डा० ज़ाकिर हुसैन के असामयिक निधन पर अपना हार्दिक दुख प्रकट करती है और उनके देशभक्ति, राष्ट्रीय एकता, धर्मनिरपेक्षता और मानव सेवा के ऊंचे आदर्शों को आगे बढ़ाने की प्रतिज्ञा करती है।

लोकसभा के अध्यक्ष, श्री नीलम संजीव रेड्डी ने अपनी श्रद्धांजलि में कहा, "वह विद्या, विनय, सर्वधर्म, समभाव और शिष्टता के प्रतीक थे। उनकी आकस्मिक मृत्यु से राष्ट्र को ऐसी क्षति उठानी पड़ी है जो मुश्किल से पूरी होगी। यह हानि राजनीतिक क्षेत्र को ही नहीं हुई है, बल्कि और क्षेत्रों को भी, विशेष कर शिक्षा जगत को हुई है।"

सभी राजनीतिक दलों के नेताओं ने दिवंगत नेता को श्रद्धांजलि अर्पित की। भूतपूर्व राष्ट्रपति डा० राधाकृष्णन् ने कहा, "वह महान व्यक्ति और प्रमुख शिक्षाशास्त्री थे। वह अपनी मेहनत और योग्यता के बल पर इतने ऊंचे पद पर पहुंचे थे।" भारत के भूतपूर्व गवर्नर जनरल चक्रवर्ती राजगोपालाचारी ने कहा, "डा० ज़ाकिर हुसैन भारत

माता के सच्चे सपूत थे। गांधीजी के स्वतन्त्रता आन्दोलन के लिए अली भाइयों ने जिन सिपाहियों को भर्ती किया, उनमें वह सबसे पहले थे।"

भारत के मुख्य न्यायाधीश श्री मुहम्मद हिदायतुल्ला ने कहा, "डा० ज़ाकिर हुसैन में असाधारण देशभक्ति और संस्कृति के श्रेष्ठतम गुणों का संगम हुआ था। मानव प्रेम उनका सबसे बड़ा और स्वाभाविक गुण था। प्रसिद्ध लेखक और विद्वान होने के बावजूद वह विनय और तहजीब की मूर्ति थे।" योजना आयोग के उपाध्यक्ष डा० धनंजय राव गाडगील ने कहा कि राष्ट्र ने एक ऐसे नेता को खो दिया है जो महान विद्वान और सर्वप्रिय व्यक्ति था।

शेख अब्दुल्ला ने कहा, "डा० ज़ाकिर हुसैन एक महान इंसान, शिक्षक और धर्मनिरपेक्षता के पृष्ठपोषक थे।" ईसाई नेता श्री फ्रैंक एन्थोनी ने कहा, "डा० ज़ाकिर हुसैन भारत की धर्मनिरपेक्षता के प्रतीक थे।"

विनोबा भावे ने कहा, "वह महान आत्मा ईश्वर के पास चली गई है जहां एक दिन हम सबको जाना है।" आचार्य कृपलानी ने डा० ज़ाकिर हुसैन को, "अत्यंत सभ्य, बोलने-चालने में अत्यन्त शिष्ट और वास्तविक अर्थों में विद्वान" बतलाया। श्री जयप्रकाश नारायण ने कहा कि डा० ज़ाकिर हुसैन, हमारी राष्ट्रीयता और धर्मनिरपेक्ष लोकतन्त्र, जो कि इस राष्ट्र की वास्तविक नींव है, के प्रमुख निर्माताओं में थे। उनका ऊंचा चरित्र, उनकी तहजीब, उनके उदार विचार और सद्शिक्षा के लिए उनका समर्पित जीवन हमारे लिए प्रेरणा के स्रोत रहेंगे।

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने अपने प्रस्ताव में कहा कि देश ने एक तपे हुए नेता को खो दिया है, जो कि इसकी आशा और आकांक्षाओं को मार्ग दिखलाने वाले प्रकाश स्तम्भ की भांति था और जिसकी ओर देश अपनी कठिनाइयों के क्षणों में देख सकता था। वह पहले राष्ट्रपति थे जो कि अपने कार्यकाल में ही स्वर्गवासी हो गए और हमारी पार्टी की ओर से सबसे अच्छी श्रद्धांजलि यह होगी कि हम उनके दिखाए आदर्शों पर चलें और उन्हें आगे बढ़ाएं।

स्वतन्त्र पार्टी ने हार्दिक दुख प्रकट करते हुए डा० ज़ाकिर हुसैन को 'महान देशभक्त, राजनीतिज्ञ और शिक्षाशास्त्री' बतलाया।

जनसंघ के प्रस्ताव में कहा गया कि डा० ज़ाकिर हुसैन प्रकांड विद्वान, कला प्रेमी और विविध गुणों से सम्पन्न थे। "उनकी आकस्मिक मृत्यु से जो रिक्तता आई है, वह कई वर्षों तक पूरी नहीं की जा सकेगी।"

भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी ने दिवंगत राष्ट्रपति को 'धर्मनिरपेक्षता और राष्ट्रीय एकता का प्रतीक बतलाया, जिसने देश के सर्वोच्च पद को बड़ी मर्यादा, सौम्यता और मनुष्यता के साथ निभाया।'

अपनी पार्टी की ओर से बोलते हुए मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी के नेता श्री ए० के० गोपालन ने कहा, "डा० ज़ाकिर हुसैन महान विद्वान थे और उनके आकस्मिक

निधन से देश को अकथनीय हानि हुई है। हमने एक प्रगतिशील व्यक्तित्व और प्रतिभाशाली शिक्षाविद् को खो दिया है।"

संयुक्त सोशलिस्ट पार्टी ने अपने प्रस्ताव में कहा, "दिवंगत राष्ट्रपति भारतीय राष्ट्रीयता के प्रतीक थे। उनकी आकस्मिक मृत्यु से देश ने एक अमूल्य रत्न खो दिया।"

प्रजा सोशलिस्ट पार्टी ने कहा, "डा० ज़ाकिर हुसैन भारतीय संस्कृति की उत्कृष्ट परम्पराओं के प्रतीक थे। आनेवाली पीढ़ियां उन्हें लोकतन्त्र, धर्मनिरपेक्षता और राष्ट्रीय एकता के उत्कृष्ट उदाहरण के रूप मे याद करेंगी।"

द्रविड़ मुनेत्र कषगम के संसदीय दल ने कहा, "देश ने एक प्रमुख शिक्षाविद्, विद्वान और महान देशभक्त, राजनेता व धर्मनिरपेक्षता के समर्थक को खो दिया है।"

भारतीय क्रांति दल के अध्यक्ष श्री चरण सिंह ने कहा, "डा० ज़ाकिर हुसैन की मृत्यु से देश ने केवल एक राष्ट्रपति को ही नहीं खोया है बल्कि अपना एक ऐसा राजनेता भी खो दिया है, जिसको देश के हर वर्ग के लोगों का विश्वास प्राप्त था।"

अकाली दल के अध्यक्ष संत फतहसिंह ने कहा, "डा० ज़ाकिर हुसैन की मृत्यु से देश ने एक सर्वप्रिय नेता, शिक्षाविद्, मानवता का प्रेमी और धर्मनिरपेक्षता में अटल विश्वास रखने वाले को खो दिया है।"

राष्ट्रपति डा० ज़ाकिर हुसैन की मृत्यु के शोक में भारत के लोग अकेले नहीं थे। पूरे विश्व ने एक महान भारतीय और एक महान राजनेता की मृत्यु का शोक मनाया। कई देशों ने कई दिन का राष्ट्रीय शोक मनाया। ट्रिनिदाद और टोबेगो की सरकार ने दो सप्ताह का राष्ट्रीय शोक मनाया, जबकि संयुक्त अरब गणराज्य, दक्षिण यमन गणराज्य और सिक्किम दरबार ने सात दिन का राष्ट्रीय शोक मनाया। सूडान, नेपाल, लीबिया, सीरिया और ईरान में तीन दिन का शोक मनाया गया। भूटान महाराज ने अपना जन्मदिन महोत्सव स्थगित कर दिया।

विभिन्न सरकारों के प्रतिनिधि अपने देश की ओर से डा० ज़ाकिर हुसैन के अन्तिम संस्कार में भाग लेने 5 मई को नई दिल्ली आए। सारे विश्व की राजधानियों में उस दिन दिवंगत नेता के सम्मान में झंडे झुका दिए गए।

उन लोगों में जो अपने देश की ओर से समवेदना प्रकट करने आए, श्रीलंका के गवर्नर जनरल गोपल्लव, सोवियत संघ की मन्त्री परिषद के अध्यक्ष अलेक्सी कोसिगिन, अफगानिस्तान के प्रधानमन्त्री श्री नूर अहमद इतेमादी, नेपाल के प्रधानमंत्री श्री कीर्तिनिधि बिष्ट तथा यूगोस्लाविया के प्रधानमन्त्री मीका स्पिलयेक थे।

ब्रिटेन से ड्यूक आफ कैंट, महारानी एलिजाबेथ के विशेष प्रतिनिधि के रूप में और कैबिनेट मन्त्री श्री जार्ज थाम्पसन ब्रिटिश सरकार के प्रतिनिधि के रूप में आए। संयुक्त राज्य अमरीका के प्रतिनिधि मकान और नागरीय विकास मन्त्री श्री जार्ज डब्ल्यू० रोमने थे। आस्ट्रेलिया की ओर से इयान मैक सिनक्लेयर, वर्मा की ओर से ऊ थी हान, जापान की ओर से शिरो हासेगावा, मोरक्को की ओर से हज अहमद

बरगाच, मारिशस की ओर से श्री के० जगत सिंह और ईराक की ओर से डा० इज्जत मुस्तफा आए।

पाकिस्तान का प्रतिनिधित्व प्रशासकीय परिषद के सदस्य और वहां की वायु सेना के अध्यक्ष एयर मार्शल नूर खां कर रहे थे। सिक्किम के चोग्याल स्वयं नई दिल्ली आए। भूटान का प्रतिनिधित्व वहां के विदेश मन्त्री ने किया।

कुछ अन्य प्रमुख विदेशी प्रतिनिधियों में पश्चिमी जर्मनी के वाल्टर शील, मलयशिया के दातो सी० एम० यूसुफ विन शेख अब्दुल रहमान, ईरान के जफर शरीफ इमामी, सिंगापुर के पुन्च कुमारस्वामी और संयुक्त अरब गणराज्य के डा० मुहम्मद हमीद शोकैर थे।

राष्ट्रपति के देहांत का समाचार पाते ही दुनिया भर से राज्याध्यक्षों और सरकारों के समवेदना के संदेश आने लगे थे। इनमें पोप, संयुक्त राष्ट्र संघ के महासचिव ऊ थां और दिवंगत राष्ट्रपति के पुराने मित्र खान अब्दुल गफ्फार खां के भी संदेश थे।

महारानी एलिजाबेथ द्वितीय ने कार्यकारी राष्टपति को भेजे अपने समवेदना संदेश में कहा, "मेरे पति व मुझको महामहिम डा० ज़ाकिर हुसैन की मृत्यु के समाचार से बहुत शोक हुआ है। इस दुख के क्षण में हम आपके व भारत के लोगों के साथ हैं।" अमरीका के राष्ट्रपति रिचार्ड निक्सन ने कहा,, "डा० ज़ाकिर हुसैन हिम्मतवर व ईमानदार इंसान थे, उनकी क्षति अर्से तक महसूस की जाएगी।" सर्वोच्च सोवियत अध्यक्ष मंडल के अध्यक्ष निकोलाई पोदगोर्नी ने दिवंगत ज़ाकिर साहब को 'मित्र देश भारत का एक महान राजनेता' बतलाया।

फ्रांस के कार्यकारी राष्ट्रपति एलन पोहर ने कहा कि फ्रांसवासी राष्ट्रपति डा० ज़ाकिर हुसैन के अपने देश में आने की प्रतीक्षा कर रहे थे। भारतवासियों के दुख में हम भी अपने को भागीदार मानते हैं। प० जर्मनी के राष्ट्रपति हेनरी लुबके ने अपने संदेश में कहा, "उनम भारतीय परम्पराओं के श्रेष्ठ गुणों का पश्चिमी सम्यता के विस्तृत ज्ञान के साथ संगम हुआ था।"

घाना लिबरेशन काउन्सिल के अध्यक्ष ब्रिगेडियर ए०ए० अफरीफा ने अपने संदेश में कहा कि दिवंगत राष्ट्रपति महान देशभक्त थे। भारत व उसके मित्र उनकी शानदार सार्वजनिक सेवा, कर्तव्यनिष्ठा और भारत के इतिहास के कठिन समय में उनके त्यागमय नेतृत्व को याद करेंगे। न्यूजीलैंड के गवर्नर जनरल सर आर्थर पौरिट ने डा० ज़ाकिर हुसैन को एक ऐसा व्यक्ति बतलाया, "जिन्होंने अपने देश की सेवा में मजहब और जाति की सीमाओं को लांघ दिया था।" पाकिस्तान के राष्ट्रपति जनरल ए०एम० यहिया खां ने कहा कि डा० ज़ाकिर हुसैन के रूप में भारत ने एक महान नेता को खो दिया है।

उपराष्ट्रपति और बाद में राष्ट्रपति के रूप में उन्होंने कई देशों की यात्रा की थी। उन्होंने अनेक देश के राज्याध्यक्षों का देश में स्वागत भी किया था। उन्होंने उनसे आपसी मामलों से लेकर अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति एवं सहयोग आदि विषयों पर बातचीत की थी। इसलिए अनेक देशों के नेता उनको व्यक्तिगत रूप से जान गए थे। इस कारण स्वाभाविक रूप से उनके शोक संदेशों में व्यक्तिगत अनुभूति थी। उन्होंने अपने 'मित्र' और 'अपने देशवासियों के मित्र' के देहावसान पर दुख प्रकट किया।

अल्जीरिया के राष्ट्रपति बू मोहिदीन ने लिखा, "मेरा देश आज भी उस संत मेहमान को याद करता है, जो उच्चतम आदर्श और मानवता से प्रेरित था।"

अपने संदेश में श्रीलंका के प्रधानमन्त्री डडले सेनानायक ने कहा, "मुझे उनको व्यक्तिगत रूप से जानने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था। वह एक महान विद्वान थे जिन्होंने अपनी भारी जिम्मेदारी को बड़ी शान और नीतिमत्ता से निभाया।".

हंगरी लोक गणराज्य की परिषद् के अध्यक्ष पाल लोसोन्क्जी ने कहा कि डा० जाकिर हुसैन के हंगरीवासी मित्र उन्हे सदा आदरपूर्वक याद करेंगे। उनकी मृत्यु से हमें बहुत शोक हुआ है। हमने एक सच्चा मित्र खो दिया है, जिसका हमने अपने देश में कुछ ही दिन पूर्व स्वागत करने का सौभाग्य पाया था।"

ईरान के शाह मुहम्मद रजा शाह पहलवी ने, जो कुछ ही दिन पूर्व उनसे नई दिल्ली मे मिल चुके थे, अपनी मुलाकात को याद करते हुए लिखा, "वह एकनिष्ठ, योग्य राजनीतिज्ञ और विद्वान था, जिसने देश की महान सेवा की।"

साइबेरिया गणतन्त्र के उपप्रधान डब्ल्यू० आर० टोलबर्ट ने कार्यकारी राष्ट्रपति को यह संदेश भेजा, "पिछले नवम्बर में भारत यात्रा के दौरान मैं उनसे मिला था। उनकी मानवता, देशसेवा और विश्वशांति के लिए उनके योगदान से अत्यन्त प्रभावित हुआ।"

मलयशिया के सम्राट महामहिम याग दी परतुआन गोंग ने उन्हें अपना परम मित्र बतलाते हुए कहा, "वह हमारे समय के एक महान राजनीतिज्ञ थे और उनके देहावसान से भारत को ही हानि नहीं पहुंची है, बल्कि पूरे संसार ने एक महान नेता खो दिया है।"

पोप पाल छठ ने दिवंगत राष्ट्रपति को एक "महान और आदरणीय राज्याध्यक्ष" कहा। खान अब्दुल गफ्फार खां ने कहा, "भारत को अपूरणीय क्षति उठानी पड़ी है और मैंने अपना व्यक्तिगत मित्र खो दिया है।"

संयुक्त राष्ट्रसंघ के महासचिव ऊ थां ने 'भारतवासियों की महान क्षति पर हार्दिक दुख' प्रकट किया। संयुक्त-राष्ट्र-शिक्षा-विज्ञान और संस्कृति संगठन की कार्यकारिणी ने पेरिस में हुई अपनी बैठक में अपनी कार्यकारिणी के भूतपूर्व सदस्य डा० जाकिर हुसैन को श्रद्धांजलि अर्पित की। बोर्ड के अध्यक्ष ने डा० जाकिर हुसैन को "यूनेस्को के आदर्शों का प्रतिरूप" बतलाया। यूनेस्को के डाइरेक्टर जनरल ने उन्हें 'उच्चतम कोटि का शिक्षक' कहा।

6 मई को दिल्ली में एक शोक सभा हुई। विभिन्न राजनैतिक दलों के नेताओं के अलावा राष्ट्रपति की अन्त्येष्टि में भाग लेने आए विदेशी नेता भी इस शोकसभा में शामिल हुए।

इस सभा में सोवियत प्रधानमन्त्री कोसिगिन ने कहा कि मेरा देश डा० ज़ाकिर हुसैन को समझता था और एक महान व्यक्ति, विद्वान और विश्वशांति के हामी भारत के सर्वमान्य नेता के रूप में उनका आदर करता था। वह मानवता प्रेमी थे जिन्हें युद्ध से घृणा थी। वह विभिन्न देशों के साथ मित्रता को विश्व शांति का सबसे अच्छा साधन समझते थे।

संयुक्त अरब गणराज्य की राष्ट्रीय परिषद के अध्यक्ष डा० मुहम्मद हबीब शोक्बेर ने कहा, "डा० ज़ाकिर हुसैन चाहे शिक्षाविद् के रूप में हों, अथवा राष्ट्राध्यक्ष के, पवित्रता और सच्चाई के सदा चमकते हुए प्रतीक रहेंगे।"

नेपाल के प्रधानमन्त्री श्री कीर्तिनिधि बिष्ट ने कहा, 'मेरे ऊपर सबसे गहरा प्रभाव उनकी विनम्रता और बुद्धिमत्ता का पड़ा था। वह सिद्धांतवादी व्यक्ति थे और अपने सिद्धांतों के लिए ही जिए।"

अफगानिस्तान और यूगोस्लाविया के प्रधानमन्त्रियों नूर अहमद एतमादी व मीका स्पिलयेक ने अपने देश में उनकी यात्रा का स्मरण किया। अफगानिस्तान के प्रधानमन्त्री ने कहा, "मेरा देश डा० ज़ाकिर हुसैन को भारत का एक महान सपूत मानता था।" स्पिलयेक ने कहा कि उन्होंने भारत और यूगोस्लाविया की मित्रता के लिए जो कार्य किया वह अविस्मरणीय है। संसार ने, विशेषकर विकासशील देशों ने एक बुद्धिमान और विशिष्ट नेता खो दिया।

बाल जाकिर हुसैन

हैदराबाद का वह मकान जहां जाकिर साहब पैदा हुए
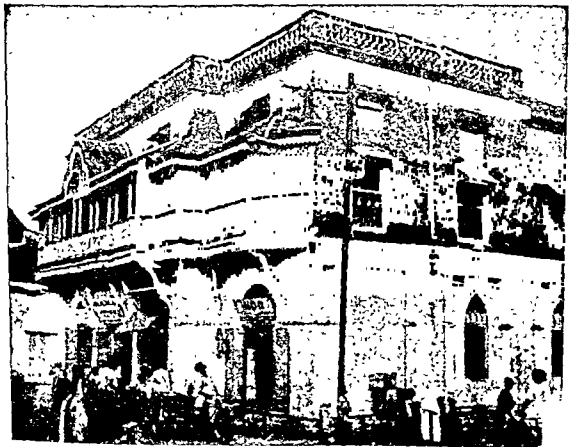
सेवाग्राम आश्रम में बापू के साथ

जवाहरलाल नेहरू के साथ

जामिया मिलिया, ओखला (नई दिल्ली)

शेख-उल-जामिया (जामिया मिलिया के उपकुलपति)

दो पुराने साथी : डा० जाकिर हुसैन
और बादशाह खान

गांधी समाधि पर फूलमाला चढ़ाते हुए

विनोबा भावे के साथ

लालबहादुर शास्त्री के साथ
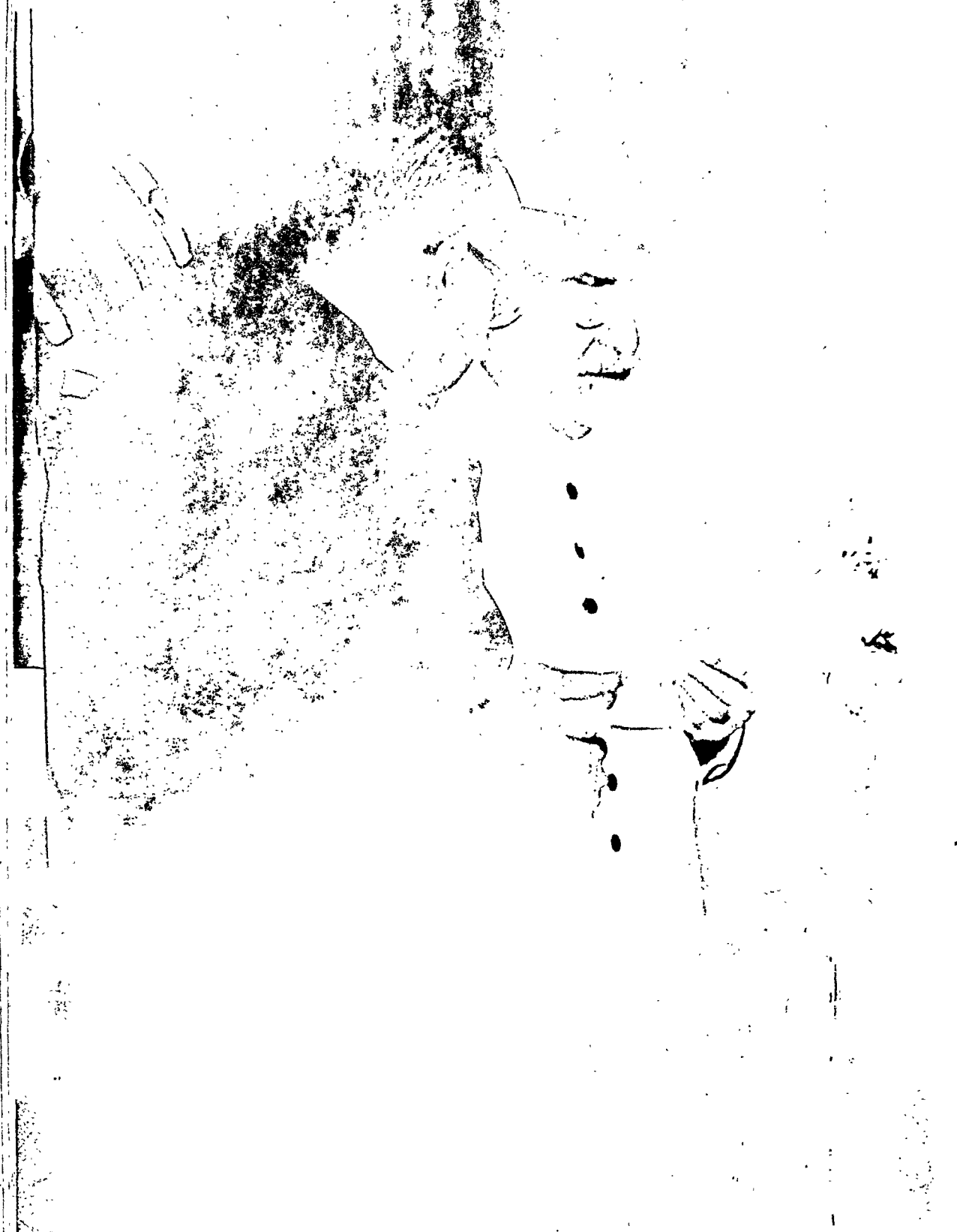
13 मई, 1967 को राष्ट्रपति पद की शपथ लेते हुए

भूतपूर्व राष्ट्रपति
डा० सर्वपल्ली राधाकृष्णन्
के साथ

प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा
गांधी के साथ

अपने संकलन के एक दुर्लभ पत्थर
का अवलोकन करते हुए

अपने नातियों के साथ

भारत मेरा घर है

मैं स्वीकार करता हूं कि हमारी जनता ने इस उच्चतम पद के लिए चुन कर मुझ पर जो विश्वास प्रकट किया है, उससे मैं बहुत अधिक प्रभावित हुआ हूं। यह भावना इस वजह से और भी प्रबल हो जाती है कि भारत के एक महान सपूत डा० राधाकृष्णन् के बाद मुझ से इस पद को संभालने के लिए कहा गया है जो वर्षों से मेरे रहनुमा और दोस्त रहे हैं और जिनके अधीन मुझे पिछले पांच साल काम करने का अनमोल मौका मिला है। मैं उनके कदमों पर चलने की कोशिश करूंगा परन्तु उनकी बराबरी कैसे कर सकूंगा।

डा० राधाकृष्णन् जैसा आला दिमाग, ज्ञान और गहरा अनुभव लेकर इस ओहदे पर आए थे, उसका उदाहरण नहीं मिलता। उनका सारा जीवन ज्ञान तथा सत्य की खोज के लिए समर्पित था। भारतीय दर्शन को समझाने और सभी आध्यात्मिक सिद्धांतों की एकता पर प्रकाश डालने के लिए उन्होंने जितना काम किया उतना किसी भी आदमी ने नहीं किया। उन्होंने आदमी की आदमीयता पर विश्वास कभी नहीं छोड़ा और वह हमेशा इस बात का समर्थन करते रहे कि सब आदमियों को इज्जत और इंसाफ के साथ रहने का एक सा अधिकार है। शिक्षा के क्षेत्र में उनकी सेवाएं अनमोल हैं। उप-राष्ट्रपति तथा राज्यसभा के सभापति के रूप में उन्होंने 10 साल तक राष्ट्र की अनुपम सेवा की और यह उचित ही था कि इस पद के बाद वह राष्ट्रपति चुने गए। अपने पद से अवकाश लेते समय सारा मुल्क उन्हें कृतज्ञता से धन्यवाद दे रहा है और उनके प्रति अपना प्रेम और आदर जता रहा है। हमारी दुआ है कि वह अनेक वर्षों तक स्वस्थ और सुखी रहें।

मैं आपको केवल इतना यकीन दिला सकता हूं कि मैं इस पद को नम्रता और सच्ची लगन से स्वीकार करता हूं। मैंने अभी भारत के संविधान के प्रति वफादारी की शपथ ली है। यह एक नए राष्ट्र का संविधान है, जिसे उसके आजाद नागरिकों ने अपने इतिहास में पहली बार अपने लिए बनाया है। हमारा राज्य नया है मगर हमारी कौम पुरानी है। इस कौम ने हजारों सालों में और अनेक जातियों के सहयोग से अपने तरीके से अपनी जिंदगी में कुछ ऐसी सचाइयों को उतारने की कोशिश की है जो कभी नहीं बदलती। मैं उन सचाइयों व आदर्शों पर चलने की प्रतिज्ञा करता हूं। वक्त के बदलने से किसी सचाई पर अमल का तरीका पुराना पड़ सकता है। मगर वह असूल हमेशा वही रहता है और नित नए अनुभव करने को प्रेरित करता रहता है। अतीत कभी बेजान और जड़ नहीं होता।

वह सजीव और गतिशील होता है और वह हमारे वर्तमान और भविष्य के स्वरूप पर प्रभाव डालता है। अपने अनूठे ढंग से कविवर रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने कहा है :—

हे शाश्वत अतीत
तुम्हारी निश्शब्द पगध्वनि मेरे हृदय में गूंजी है
दिन के कोलाहल में मैंने देखी है तुम्हारी शांत मुद्रा
हमारे भाग्य की अदृश्य रेखाओं में
हमारे पितरों की अधूरी कथाएं
लिखने तुम आए हो
तुम नवीन बिम्बों को स्वरूप देने के लिए विस्मृत काल
को फिर जीवन देते हो।

इस अतीत का बार-बार नया होना ही राष्ट्रीय संस्कृति और राष्ट्रीय चरित्र का विकास है। मेरी राय में शिक्षा का मकसद इसी तरह पुराने को नई जिंदगी, नए मायने देने में हाथ बंटाना है। मुझे यह मानने की इजाजत दी जाए कि इस ऊंचे ओहदे के लिए मेरे चुने जाने की पूरी नहीं तो बड़ी वजह यही है कि मेरा अपने देशवासियों की शिक्षा से जमाने तक सम्बन्ध रहा है। मेरा यह ख्याल है कि शिक्षा कौम के मकसदों को हासिल करने का मुख्य जरिया है और जैसी कौम की शिक्षा होती है, वैसी कौम भी होती है। इसलिए मैं अपने अतीत की समग्र संस्कृति के प्रति चाहे वह जिस स्रोत से प्राप्त हुई हो, चाहे उसके निर्माण में जिस किसी ने भी हाथ बंटाया हो, अपनी निष्ठा प्रकट करता हूं। मैं अपने देश की समग्र संस्कृति की सेवा का व्रत लेता हूं। मैं प्रदेश और भाषा का ख्याल किए बिना अपने देश के प्रति अपनी वफादारी जाहिर करता हूं। मैं उसकी ताकत और तरक्की के लिए जात-पात और मजहब का भेदभाव किए बिना अपने देश के सब लोगों की भलाई के लिए काम करने का व्रत लेता हूं। सारा भारत मेरा घर है और उसके लोग मेरे परिवार के लोग हैं। लोगों ने कुछ समय के लिए मुझे इस परिवार का कर्ता चुना है। मैं सच्ची लगन से इस घर को मजबूत और सुन्दर बनाने की कोशिश करूंगा, ताकि वह मेरे महान देशवासियों के लायक घर हो जो कि एक सुन्दर जीवन के निर्माण के प्रेरक कार्य में लगे हुए हैं, जिसमें इन्साफ और खुशहाली का राज हो। यह परिवार बड़ा है और बराबर ऐसी रफ्तार से बढ़ रहा है जो कुछ परेशानी पैदा कर रही है। हममें से हर एक को इस देश की नई जिंदगी के बनाने में अपने क्षेत्र में और अपने-अपने ढंग से जी-जान से काम करना होगा। हमें जो काम करने हैं, वे इतने बड़े हैं और इतने जरूरी हैं कि हाथ रोक कर बैठ जाने या हिम्मत छोड़ने से काम नहीं चल सकता। वक्त की मांग है कि हम काम करें, ज्यादा काम करें, शांति से और सच्ची लगन से काम करें और अपने देशवासियों के समूचे भौतिक और सांस्कृतिक जीवन का ठोस ढंग से फिर से निर्माण करें।

जैसा कि मैं देखता हूं, इस काम के दो पहलू हैं—एक यह जो अपने लिए किया जाता है और दूसरा वह जो अपने समाज के लिए। असल में ये दोनों ही एक दूसरे से बंधे हैं। अपने लिए जो काम किया जाता है, वह आत्म संयम से अपने आजाद व्यक्तित्व के नैतिक विकास के लिए होता है।

जब तक समाज की हालत बेहतर और अधिक न्यायपूर्ण नहीं होती, आजाद और नैतिक व्यक्ति उसमें रह नहीं सकता। व्यक्ति का पूर्ण विकास तब तक नहीं हो सकता जब तक कि समाज के सामूहिक व्यक्तित्व का उसी प्रकार विकास न हो। हम सब, व्यक्तिगत और सामाजिक कार्यों में पूरे दिल से लगने का संकल्प करें। यह दुहरा प्रयत्न हमारे राष्ट्र के जीवन को एक खास रंग देगा। राष्ट्र हमारे लिए महज एक संगठन न होगा, वह एक नैतिक संस्था होगी। हमारे राष्ट्र का यह स्वभाव है और हमारी आजादी के आंदोलन के महान नेता महात्मा गांधी की यह विरासत है कि सत्ता या ताकत का इस्तेमाल नैतिक उद्देश्यों के लिए ही किया जाए। हम ऐसी शांति के लिए काम करेंगे जो मजबूत आदमियों की शोभा होती है। हमारे राष्ट्र के भविष्य की कल्पना में, दूसरे देशों को दबाने या अपना राज बढ़ाने का कोई स्थान नहीं होगा। हम यह कोशिश करेंगे कि हर एक नागरिक को कम से कम वे चीजें हासिल हों जो अच्छे रहन-सहन के लिए जरूरी हैं। हम अपने दिमाग को कुंद व काहिल न होने देंगे और इंसाफ से मुंह न मोड़ेंगे। हम तंगदिली व खुदगर्जी को मिटाएंगे और हम इसको पवित्र कर्तव्य समझ कर खुशी से करेंगे। हम अपने राष्ट्रीय जीवन में शक्ति के साथ धर्म का, कला कौशल के साथ नैतिकता का, काम के साथ विवेक का, पश्चिम के साथ पूर्व का, बुद्ध के साथ सीगफ्रीड का मिलाप करेंगे। हम शाश्वत और सांसारिक, दक्षता और विवेक, विश्वास और अमल दोनों लक्ष्यों को ध्यान में रखेंगे।

मुझे पूरा भरोसा है कि देश के लोगों में इस दुहरे काम को अंजाम देने की शक्ति है। इस दिल बढ़ाने वाले काम मे हाथ बंटाने में मैं अपना गौरव समझूंगा।

*

महात्मा गांधी और आज की समस्याएं

एक भारतीय होने के नाते मैं आज महात्मा गांधी के बारे में कुछ और लोगों की बनिस्वत अधिक आजादी और विश्वास से बोल सकता हूं। यह भारत ही था जहां गांधीजी आधी सदी तक रहे, और उन्होंने लगातार बिना थके लिखा, बोला और काम किया। यह भी भारत ही था जहां की मिट्टी उस शहीद के रक्त से रंगी, जबकि एक हत्यारे की गोलियां उनके सीने में लगीं, और अपने देशवासियों के बीच शांति और सद्भाव बढ़ाने के लिए उन्होंने अपने प्राणों की बलि दे दी। मगर आज की दुनिया की तारीख के इस दौर में मैं आदमी के दिमाग व ख्यालात को किस तरह भारतीय और अभारतीय दो टुकड़ों में बांट सकता हूं। मैं पूरी मानव जाति को एक अविभाज्य परिवार के रूप में देखता हूं।

गांधीजी अकेले भारत के ही नहीं थे। उन्होंने हर देश की सभ्यता के सर्वश्रेष्ठ तत्वों को आत्मसात किया था। हम देखते हैं कि मनुष्य आज उन्हीं समस्याओं का सामना कर रहा है जिनसे वह जन्म भर जूझते रहे। अब से पहले, संसार के इतिहास में कभी भी 'एक विश्व' की सम्भावना इतनी नजदीक नहीं आ पाई थी जितनी कि आज। साथ ही साथ यह कभी भी उतनी दूर नहीं थी, जितनी आज दीखती है। मैं अपनी बात सारी दुनिया के लोगों से कह रहा हूं। जब मैं सोचता हूं कि गांधीजी की शताब्दी पास आ गई है, मेरे दिल में अजीब भाव उठते हैं।

इतिहास के कई और महापुरुषों की भांति गांधीजी के कुछ कार्य और विचार उस वक्त की समस्याओं और परिस्थितियों से सम्बन्ध रखते थे और शायद वे सब लोगों और सब समय के लिए उपयुक्त नहीं हैं। इतिहास खुद इन वक्ती बातों को छांट देगा। परन्तु हमको गांधीजी के बुनियादी और अनमोल विचार और काम करने के मूल तरीकों के साथ ही सामाजिक अनुशासन को बनाए रखने का प्रयत्न करना चाहिए।

गांधीजी को केवल संत के रूप में ही स्मरण करना भूल होगी। वह इसी संसार के व्यक्ति थे और आधुनिक भारत तथा संसार की राजनीतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक कठिनाइयों की ओर से बेखबर नहीं थे। उनके व्यक्तित्व में आध्यात्मिक, नैतिक, सामाजिक तथा सांस्कृतिक मूल्यों का आदर्श समन्वय था। हमारी याददाश्त में किसी भी नेता ने इतनी पूर्णता से आध्यात्मिक और सांसारिक कर्तव्यों का निर्वाह नहीं किया। गांधीजी भौतिक और आध्यात्मिक उन्नति को कभी अलग करके नहीं देखते थे, उनके हर कार्य में भी यही बात होती थी।

मूलरूप से गांधीजी ने इस बात पर जोर दिया कि हमें नैतिक मूल्यों को मानने वाली एक विश्व सरकार की आवश्यकता है। कोई भी व्यक्ति, समाज या राष्ट्र, नैतिक, कानून के दायरे के बाहर नहीं रह सकता और यदि वह ऐसा करेगा, तो उसकी बरबादी

निश्चित है। गांधीजी ने कभी इस बात को नहीं माना कि व्यक्ति के नैतिक आदर्श-वर्ग या राष्ट्र के आदर्श से भिन्न हो सकते हैं। सभ्यता तथा संस्कृति सभी सार्थक होंगे, जब व्यक्ति तथा राष्ट्र राजनीतिक और आर्थिक क्षेत्रों में नैतिकता बरतें। नैतिकता—राजनैतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक—किसी भी प्रकार के शोषण की इजाजत नहीं देती। नैतिक नियमों के अन्तर्गत कुछ व्यक्ति या वर्ग दूसरों पर आधिपत्य नहीं जमा सकते।

गांधीजी ने इस बात पर जोर दिया कि उद्देश्य चाहे कितना ही ऊंचा या क्रांतिकारी क्यों न हो, उसको प्राप्त करने के तरीके भी पवित्र होने चाहिए। पवित्र साधनों से गांधीजी का अर्थ यह था कि जो कार्य किया जाए, वह प्रेम तथा अहिंसा की भावना से किया जाए। उनका कहना था कि प्रेम से कार्य करना ही अहिंसा है।

इसलिए घृणा और अहिंसा अपवित्र साधन हैं। क्रूरता, डर और हिंसा उनके लिए बिल्कुल त्याज्य हैं। इस तरह हमारे लिए केवल अहिंसा का ही रास्ता रह जाता है। गांधीवादी शब्दावली में सत्याग्रह शब्द बड़ा महत्त्वपूर्ण है। इसका अर्थ है अहिंसक रहते हुए सीधे कार्रवाई करना। हमको यह बात साफ तौर पर समझ लेनी चाहिए कि गांधीजी सदा अहिंसक कार्रवाई पर जोर देते थे, महज अहिंसा पर नहीं। हर प्रकार के अन्याय तथा अत्याचार का सक्रिय प्रतिरोध ही उनकी अहिंसा थी। इस प्रकार, अहिंसा का सिद्धांत जितना पुराना हो, सत्याग्रह या अहिंसापूर्वक सक्रिय प्रतिरोध का तरीका गांधीजी का अपना है। हमें यह भी याद रखना चाहिए कि सत्याग्रह व्यक्तिगत कार्रवाई ही नहीं, बल्कि सामूहिक कार्रवाई भी है।

गांधीजी द्वारा 'सत्याग्रह' का प्रयोग करने से पहले, यह इतिहास का एक आवश्यक नियम लगता था कि कमजोर लोग बलवान के आगे या तो घुटने टेक दें वरना नष्ट हो जाएं। गांधीजी के बाद यह बात अब नहीं रही। शारीरिक रूप से कमजोर पर नैतिक रूप से बलवान लोग 'सत्याग्रह' के जरिये शारीरिक रूप से बलवान और नैतिक रूप से कमजोर लोगों से प्रभावशाली ढंग से लड़ सकते हैं। इसलिए 'सत्याग्रह' के समर्थकों की यह बात सही है कि न्याय तथा स्वतन्त्रता की लड़ाई में कहीं भी और किसी भी स्थिति में सत्याग्रह संसार का सबसे बड़ा हथियार है।

गांधीजी ने दुनिया के तमाम धर्मों का आदर करने की शिक्षा दी है। वह इस बात को अच्छी तरह समझते थे कि इतनी सारी वैज्ञानिक और तकनीकी उन्नति के बाद भी करोड़ों लोग किसी न किसी धर्म को मानते हैं। गांधीजी, विभिन्न धर्मों में निहित शक्ति का पता लगाने के लिए सभी धर्मों की एकता के हामी थे। धर्मों की इसी समन्वित शक्ति से वह राजनीति और अर्थनीति को प्रभावित करना चाहते थे। धार्मिक एकता की कुंजी, तमाम धर्मों के लिए आदर की भावना, सहनशीलता तथा उदारता में है·········गांधीजी हमारे वक्त के एकमात्र महान राजनेता थे, जिन्होंने इस बात को असंदिग्ध रूप से सिद्ध कर दिया कि धर्म की भावना का उपयोग इंसान की आजादी और सामाजिक न्याय हासिल करने में किया जा सकता है।

गांधीजी ने लोकतन्त्र की अपनी नई परिभाषा दी है। अगर हम सच्चे अर्थों में लोकतन्त्री बनना चाहते हैं तो इस पर अमल किए बिना हमारा त्राण नहीं है। जैसा कि कविवर रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने कहा है, "लोकतन्त्र में जो महत्व सबसे ऊंचे और विकसित व्यक्ति का है, वही निर्धन, नीचे तथा उपेक्षित व्यक्तियों का भी है। गांधीजी ने बहु-संख्यक वर्ग के निरंकुश शासन को कभी लोकतन्त्र नहीं माना। अल्पसंख्यक तानाशाही का तो उनके सामने कोई प्रश्न ही नहीं था, चाहे वह तानाशाही कितनी भी दृढ़ या क्रांतिकारी हो। उन्होंने इस बात को स्वीकार नहीं किया कि शक्तिशाली की बेहतरी के लिए दुर्बलों की बलि दी जाए। सच्चे लोकतन्त्र में, न केवल अल्पसंख्यकों की सुविधाओं का पूरा-पूरा ध्यान रखना जरूरी है, बल्कि जाति और वर्ग के भेदभाव के बिना, सबको एक सी-स्वतन्त्रता और सुविधाएं मिलनी भी जरूरी हैं। वह ऐसे जातिहीन और वर्गहीन समाज को बनाना चाहते थे जिसका निर्माण अहिंसा के जरिये हो और जो शांति के बल पर कायम रहे। गांधीजी के लोकतन्त्र की यह नई धारणा ही, जिसमें सबसे निचले स्तर के लोगों की चिंता की जाती है, 'सर्वोदय' है। अगर 'सर्वोदय' को सही रूप से समझा जाए तो आज की दुनिया में यह लोकतन्त्र का सबसे व्यापक रूप है।

गांधीजी व्यक्ति का पूर्ण विकास चाहते थे। साथ ही इस बात पर भी जोर देते थे कि इसके लिए ऐसे समाज की नितान्त जरूरत है, जिसमें सबको पूरा न्याय मिले और जहां शोषण न हो। नैतिक व्यक्ति और नैतिक समाज को अलग-अलग नहीं किया जा सकता।

मैं पूछता हूं क्या हमारा युग और हमारी पीढ़ी ऐसे देदीप्यमान नेता को भुला सकती है, जिसमें अनोखी बुद्धि के साथ विशाल हृदय था, ऊंचे आदर्शों के साथ पक्की व्यावहारिकता भी थी, जो सत्य व दया का अवतार था और जिसने अहिंसा के द्वारा क्रांति का रास्ता दिखाया था। बिना गांधीजी के आदर्शों को अपनाए, बिना राजनीति को शुद्ध किए और अर्थनीति को ऊंचा उठाए, बिना उनकी अहिंसा को अपनाए और परमाणु अस्त्रों को समाप्त किए, बिना उनके लोकतन्त्र के आदर्श को अपना कर समाज के गरीब से गरीब और कमजोर से कमजोर लोगों को सुरक्षा और आगे बढ़ने की सुविधा दिए और अन्त में बिना व्यक्ति की स्वतन्त्रता का समाज और राष्ट्र के अधिकार से मेल मिलाए, जिसके लिए वह जीवन भर लड़ते रहे, मानवजाति की मुक्ति सम्भव नहीं है।

हमारी शताब्दी का या तो यह सौभाग्य होगा कि हम गांधीजी की शिक्षाओं पर ध्यान देकर न्याय, समानता तथा सर्वोदय पर आधारित नई विश्व व्यवस्था की ओर बढ़ें, अथवा हमारे युग का सबसे बड़ा दुर्भाग्य होगा कि हम उन्हें भूल जाएं और सर्वनाशी परमाणु युद्ध के कगार पर पहुंच जाएं।

पहली अक्टूबर 1968 को आकाशवाणी से प्रसारित भाषण के कुछ अंश

नए भारत का निर्माण

यह हमारा सौभाग्य है कि हमें इस प्राचीन देश के नव निर्माण का कार्य मिला है। हममें से हरएक को इस आनन्दप्रद कार्य में तन, मन, धन से लग जाना चाहिए। यह एक बड़ा काम है और केवल नारे लगाने से, या खिड़कियों के शीशे तोड़ने, या नासमझ होकर अपने राज्य की सम्पत्ति तोड़ने-फोड़ने से पूरा नहीं हो सकता। इसे हम सब लोगों की पीढ़ी दर पीढ़ी की जीतोड़ मेहनत की जरूरत है।

हमारे देश के लोगों ने बड़ी समझदारी से लोकतन्त्र का रास्ता चुना है। परन्तु हमें सदा यह याद रखना चाहिए कि लोकतन्त्र का मतलब केवल बहुमत का शासन नहीं है। लोकतन्त्र आम जनता के समर्थन और अपनी जिम्मेदारी समझने पर चलता है। कर्तव्य की यही भावना हम लोगों को प्रेरित करती है कि हम अपनी पूरी योग्यता और हुनर देश के हित में लगाएं और देश को आगे बढ़ाएं। लोकतन्त्र में प्रत्येक नागरिक का चरित्र ऊंचा होना चाहिए।

लोकतन्त्र के नागरिक की शान इस बात में नहीं है कि उसके कितने अधिकार हैं, बल्कि इसमें है कि वह अपने कर्तव्यों को पूरा करना ही अपना सर्वोच्च अधिकार और शान माने। हमारे नौजवानों को यह बात साफ तौर से समझ लेनी चाहिए कि देश का भविष्य उनके कर्तव्य पालन की भावना और योग्यता पर निर्भर है। वरना चाहे कितने भी अधिकारों की माग करें और उन्हें प्राप्त करें, इनका कोई लाभ या अर्थ नहीं।

मेरा यह पक्का विश्वास है कि हमारे राज का ढाचा और वह स्तम्भ जिस पर यह टिका है, यानी हमारी जनता की निष्ठा, पक्की है; पोख्ता है, और मैं हर शख्स से यह अपील करता हू कि हम सब लोग कधे से कंधा मिला कर एक राष्ट्र के रूप में खड़े हों और उन सब मुसीबतो तथा समस्याओं का दृढ़तापूर्वक सामना करें जो देश के सामने आएं।

हम में से हरएक को चाहे वह किसी भी क्षेत्र में हो, लगन से काम करना चाहिए, क्योंकि हम में से हरेक को अपने मुल्क की इस शानदार इमारत को बनाने में हाथ बटाना है, जिसका हमने सपना देखा है।

आज पहले से कहीं ज्यादा उस अनुशासन और आत्मनियंत्रण की आवश्यकता है जिसके बल पर हमने स्वतन्त्रता पाई। मेरा यह पक्का विश्वास है कि इन गुणों की लागों में कमी नहीं हैं और हम लोग अपने-अपने क्षेत्र में काम करते हुए भविष्य की चुनौती का सामना आत्मविश्वास, दृढ़ता और कर्तव्यनिष्ठा से कर सकेंगे।

मुल्क के नौजवान आप खुश रहें और अपने देशवासियों को भी खुशी पहुंचाए। अपने पर कड़ा आत्मनियन्त्रण रखें। आप में आत्मसम्मान के साथ वह शील हो जो आत्म-

त्याग और सेवा से पैदा होता है। दुनिया की सेवा करो और जो कुछ उसे दे सकते हो, दो। दिमाग में जिज्ञासा और दिल में मुहब्बत रखो, कड़वाहट और कुंठा को जीत कर विश्वास और शांति हासिल करो और सबसे बढ़ कर अपने में ऐसा प्रेम पैदा करो जो तुम्हें और तुम्हारे सम्पर्क में आने वाले हर शख्स को ऊंचा और पवित्र बनाए।

एक देश : एक राष्ट्र

हम इस बात को नहीं भुला सकते कि हम सब एक देश के रहने वाले हैं और हमारे देश का भविष्य हमारी एकता और कर्तव्यनिष्ठा पर निर्भर है। भारत संघ के किसी भी राज्य की उन्नति पूरे देश की उन्नति में है। अंगों की उन्नति से शरीर की उन्नति होती है और इस पर निर्भर भी होती है। अगर भारत मरता है तो हम में से कौन जी सकता है, और अगर भारत जीता है तो कौन मर सकता है।

हम लोगों को अपने देशवासियों के मन में अपने पुराने शानदार देश के लिए प्रेम और जीवन के हर क्षेत्र में, हमारी कौम ने जो कर दिखाया है उसके लिए आदर पैदा करना चाहिए। देशभक्ति की शान ही हमें आगे बढ़ने की शक्ति दे सकती है जो कि आज बहुत ही जरूरी है। आइए, हम फूट की प्रवृत्तियों का सामना करें और अपने राष्ट्र को मजबूत बनाने में सहायक बनें। यही आत्म विश्वास और राष्ट्रीय अभिमान हमें अपनी आर्थिक और सामाजिक व्यवस्था में परिवर्तन करने की प्रेरणा देगा।

हमारी सारी भाषाएं एक ही संस्कृति और परम्परा की उपज हैं। भाषा की ऊपरी विभिन्नता के बावजूद देश में एक आन्तरिक एकता है। भाषा के आधार पर राज्यों के गठन का मकसद प्रशासन को अच्छा बनाना है और इसे कभी भी देश की एकता में बाधक न होने देना चाहिए। कोई भी राज्य या क्षेत्र दूसरे को नुकसान पहुंचा कर फलफूल नहीं सकता। देश की एकता को भुलाकर हम संकट में पड़ सकते हैं।

सेना का हर अंग, समूचे भारत का नुमाइंदा है। हिन्दू, मुसलमान, सिख, ईसाई और दूसरे लोग इन टुकड़ियों में साथ-साथ रहते हैं। उनका एक ही मकसद है। देश की हिफाजत और मातृभूमि के सम्मान के लिए सब अपनी जान कुर्बान करने के लिए तैयार रहते हैं। वे अलग-अलग भाषाएं बोलते हैं, अलग-अलग रीति-रिवाजों पर चलते हैं, परन्तु एक चीज में वे एक हैं और वह है कि सब भारतीय हैं। हमारे ये सैनिक भारत की एकता के शानदार नमूने हैं।

मुझे इस बात में कोई शक नहीं है कि जब तक हम राष्ट्र को एक नैतिक रूप नहीं देते, जब तक लगातार बड़े पैमाने पर शिक्षा देकर लोगों में यह विश्वास नहीं जमा देते कि हमारे राज्य की बुनियाद ऊंचे नैतिक यकीनों पर है, जब तक कि हम तालीमी संस्थाओं या अन्य तरीकों से शिक्षा देकर लोगों के दिमाग में, खास कर बौद्धिक और

राजनीतिक तबकों में एक ऐसी अदम्य इच्छा नहीं पैदा कर देते कि राष्ट्र का यह नैतिक आधार न केवल बना रहे बल्कि बढ़े और ऊंचा उठे, और जब तक कि इन सब तरीकों से लोगों में अपनी जिम्मेदारी की भावना पैदा नहीं कर देते, तब तक राष्ट्रीय एकता कायम नहीं हो सकती।

मुझे लगता है कि भारत का मकसद दुनिया में एक ऐसी कौम या मानवता का विकास करना है, जिसमें मुख्तलिफ कौमों व जातियों की सारी खूबियों का मिलाप होगा और इस तरह सभ्यता का एक नया नमूना बनाना है जो कि शायद मौजूदा ढांचे से कहीं बेहतर होगा।

मैं इसी ख्याल से यहां (अलीगढ) आने को तैयार हुआ, कि मैंने यह साफ महसूस किया कि यहां एक राष्ट्रीय काम करने का अनोखा मौका है, यह हिन्दुस्तान की हुकूमत व तालीम का भी बुनियादी काम है —एक धर्मनिरपेक्ष व लोकतन्त्री राज्य में एकता में बंधे समाज का निर्माण और जो चार करोड़ मुसलमान इसके नागरिक हैं, उनका इसमें स्थान बनाना। कितना बड़ा और दिलकश है यह काम। यह काम ऐसी कौमी जिन्दगी को बनाना है जो मुहब्बत और मेल की डोर से बंधी हो जिसमें कि हर हिस्सा दूसरे की प्रतिभा को चमकाए और मुख्तलिफ सभ्यताओं और तहज़ीबों को मिला कर मुल्क के भविष्य को बनाए और संवारे।

हमारे देश के सामने एक शानदार काम है ··· एक अच्छी कौमी जिन्दगी को बनाने का काम। हर एक का कर्तव्य है कि वह अपनी पूरी शक्ति इस काम में खुशी-खुशी लगा दे।

शिक्षा

शिक्षा वास्तव में हमारे लोकतन्त्री जीवन की जान है। हमारे जैसे पुराने और साथ ही नए राष्ट्र को जिन्दगी को बनाने का मुख्य साधन शिक्षा ही है। शिक्षा ही हमारी महान सांस्कृतिक परम्परा का सही मूल्यांकन कर सकती है और उसमें जो तत्व हमको आगे बढ़ाने वाले हैं, उनको ले सकती है और जो हमें पीछे हटाने वाले हैं, उनको छोड़ सकती है। शिक्षा ही हमको, हमारे भविष्य की दर्शन दिखा सकती है। वह भविष्य जो हम तय कर है और उसके निर्माण के लिए हम में बौद्धिक व नैतिक शक्ति भर सकती है। शिक्षा ही उन पुराने मूल्यों को, जो कि वास्तव में बनाए रखने योग्य हैं, बनाए रख सकती है। शिक्षा ही हमें जीवन के नए और सही मूल्य दे सकती है।

अगर आप इस बुनियादी बात को समझते हैं कि शिक्षा का अर्थ, केवल किताबी ज्ञान नहीं है, बल्कि इसका काम हमारी सारी शक्तियों का संतुलित विकास करना है, और यह काम तभी हो सकता है, जबकि हम लड़कों को वह चीज दें, जिसमें उनका कुदरती रुझान है, तब आप देखेंगे कि तालीम के क्षेत्र में कितनी बड़ी गुंजाइश है।

अगर राज पहली ईंट को सीध में न रखेगा तो दीवार सीधी खड़ी नहीं हो सकती, चाहे उसे आप आसमान तक क्यों न उठाएं। विश्वविद्यालय की शिक्षा के लिए ठोस प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षा की आवश्यकता है, वरना इसका रूप कभी ठीक नहीं हो सकता।

जो लोग काम या हुनर के जरिये शिक्षा देना चाहते हैं, उन्हें यह बात जान लेनी चाहिए कि काम निरुद्देश्य नहीं होता। काम का मतलब उलटा-सुलटा काम करके समय बिताना नहीं है। यह कोई दिल बहलाव नहीं है। यह खेल या तमाशा भी नहीं है। काम तो काम है। यानी किसी मकसद से काम करना। काम कैसा हुआ है, यह काम करनेवाला खुद देख लेता है और जब उसे अपने काम से संतोष हो जाता है तब बेहद आनन्द आता है। काम इबादत या पूजा है।

विश्वविद्यालय विचारों का घर है। खोज और नए सवाल उठाना उसका काम है। उन्नतिशील समाज में स्थापित मान्यताओं की जांच करना उसका रोजमर्रा का काम है। समाज को ऐसा इंतजाम करना चाहिए कि विश्वविद्यालय अपना यह काम बिना किसी रोक टोक व हस्तक्षेप के करें। समाज को यह देखना चाहिए कि भारत के विश्वविद्यालयों में, थॉमस जैफरसन के शब्दों में "मानव मस्तिष्क को असीमित स्वतन्त्रता हो, जहां आदमी सत्य की खोज में किसी भी हद तक जाने में न हिचके, और किसी भी गलत बात को बर्दाश्त न करे।"

सही किस्म का विश्वविद्यालय हमारे अतीत को सही ढंग से समझेगा और परखेगा। यह हमारे भविष्य की एक तस्वीर हमारे सामने रखेगा। यह अपने अच्छे काम से इस तस्वीर को चमकाएगा, जिसको जिंदगी में उतारने के लिए लोग पूरी शक्ति लगाकर काम करेंगे और इस प्रकार हमारे शानदार अतीत से भी ज्यादा शानदार भविष्य का निर्माण होगा।

मुझे लगता है कि सारी खराबी की जड़ यह है कि हम दूसरों के द्वारा प्राप्त ज्ञान को ही देकर सन्तुष्ट हो जाते हैं। हम सेकेंड हैंड ज्ञान तथा सेकेंड या दोयम दर्जे की तालीम से संतोष कर लेते हैं। हमारे विश्वविद्यालयों में शिक्षा के स्वरूप, उद्देश्य और विधियों के बारे में बहुत कम विचार होता है जो कि खतरनाक है।

जो लोग यह सोचते हैं कि स्कूल व कालेजों से बाहर निकल आने पर शिक्षा समाप्त हो जाती है और आगे पढ़ने-लिखने की आवश्यकता नहीं है, वह बिल्कुल गलती पर हैं। शिक्षा का मकसद केवल बच्चों को स्कूलों में लिखना-पढ़ना सिखाना या विश्वविद्यालयों में कुछ चुनी पुस्तकें पढ़ाना भर नहीं है। शिक्षा का उद्देश्य पढ़ने-लिखने की, स्वाध्याय की सुविधा देना और ज्ञान को ताजा बनाए रखना भी है।

शिक्षा जीवन भर चलने वाली चीज है। आज की दुनिया में जिन्दा रहने के लिए लगातार नया ज्ञान प्राप्त करते रहना आवश्यक हो गया है। पुराने जमाने में, दादा जो पढ़ते-सीखते थे, वह पोतों के लिए भी काफी समझा जाता था। थोड़ी-सी बातें बता देने

से काम चल जाता था, हर स्थिति में ये बातें काम आ जाती थीं। जीवन का रास्ता बना बनाया था। आज यह असम्भव है। आज तो हर आदमी को अपना रास्ता खुद बनाना है। शिक्षक महज उसे दिशा दिखा सकता है। तेजी से बदलते आज के युग में एक बात निश्चित है और यह यह है कि गुजरे हुए कल की शिक्षा आज की जरूरतों को पूरा नहीं कर सकती; न ही आज की व्यवस्था आनेवाले कल की समस्याओं को सुलझा सकती है।

शिक्षा का, और इसीलिए विश्वविद्यालय का सम्बन्ध व्यक्ति से और आत्मा से है। विश्वविद्यालय अपनी इस जिम्मेदारी से इन्कार नहीं कर सकते। अच्छी शिक्षा व्यक्ति के जीवन को समृद्ध बनाती है और उसकी आत्मिक शक्तियों का पूर्ण विकास करती है।

भारतीय शिक्षा का प्रवाह काफी अरसे से रुका हुआ था। अब जब इसका बहाव खुला है, इतने तरह के विचार आए हैं, और इन्होंने एक दूसरे को इस तरह से काटा है कि एक अजब भूल-भुलइया बन गई है।

तकनीकी शिक्षा का महत्व पिछले कुछ दिनों से, विकसित देशों के विशाल प्रयत्नों के परिणामस्वरूप, बहुत अधिक हो गया है—आधुनिक शिल्प और आधुनिक विज्ञान, वास्तव में प्रकृति के प्रति आधुनिक दृष्टिकोण के दो पहलू हैं। एक व्यावहारिक, दूसरा सैद्धांतिक। व्यवहार व सिद्धांत आज साथ-साथ आगे बढ़ते हैं। ज्ञान ही शक्ति है। वैज्ञानिक खोज और तकनीकी आविष्कार एक दूसरे से जुड़े हैं।

पुस्तक निश्चय ही आधुनिक आदमी की जीवन संगिनी है और वाकई यह एक अद्भुत संगिनी है। यह तब तक नहीं बोलती जब तक कि इससे आप न बोलें और इसे ध्यानपूर्वक न सुनें। यह अनन्त काल तक आप की प्रतीक्षा कर सकती है। यह दिन-रात सदा ही, जो कुछ भी इसके पास है, देने को तत्पर रहती है। यह सीख देती है, सलाह देती है, प्रेरणा देती है, फटकारती है, मगर यह आपका कान नहीं खाती। अगर कोई बेवकूफी के सवाल करता है तो यह चिढ़ती नहीं। वह शांति से मुस्कराती रहती है। हां, किताब एक अद्भुत साथी है। यह जो सीखना चाहते हैं उनके लिए एक अद्भुत शिक्षक है और यह दिल बहलाने का भी अद्भुत जरिया है।

अध्यापक का काम हुक्म चलाना या रोब जमाना नहीं है। उसका काम सहायता और सेवा करना और समझना है, लगन, प्रेम और सम्मान, के साथ—हां, बालक के लिए सम्मान के साथ उसका चरित्र बनाना है। इस तरह के अध्यापक ही ऐसी शिक्षा प्रणाली बना सकेंगे, जो हमारे समाज की कायापलट कर सकें।

राजनीति, खास कर हमारे देश में, एक पहाड़ी नदी के समान है जो कि अचानक ही उफन पड़ती है और फिर तुरन्त ही सूख जाती है। पर शिक्षा एक मैदानी नदी के समान है जो कि मन्थर गति से बढ़ती रहती है और यह केवल बरसाती मौसम में ही नहीं उफनती, बल्कि बर्फीले पहाड़ों के दिल को गलाकर बारह मास बहती रहती है। राजनीति राष्ट्रीय शक्ति को बढ़ाना चाहती है और इंतजार नहीं करना चाहती; शिक्षा, सामाजिक

आदर्शों को प्राप्त करना चाहती है और इसमें जल्दबाजी नहीं करती। शिक्षा इन उच्च आदर्शों की जननी है और इन्हें सदा तरोताजा रखती है। राजनीति इनकी रक्षा करती है, इसीलिए शिक्षा मालिक और राजनीति नौकर है। राजनीति काम की तेजी चाहती है, शिक्षा को परिपक्वता की आवश्यकता होती है। राजनीतिक कार्यक्रम जब तब बदलते रहते हैं, परन्तु शिक्षा की बुनियादी योजना इतनी व्यापक है कि यह कभी पूरी नहीं होती—इसका लक्ष्य पहुंचने के लिए नहीं बल्कि दिशा दिखाने के लिए है।

यदि हमारे देश में शिक्षा एक छोटी सी जाति तक सीमित नहीं रहनी है, यदि इस देश के लोग जानवरों की नहीं, आदमियों की जिंदगी जीना चाहते हैं, यदि हम सरकार पर कुछ चालाक और शक्तिशाली लोगों का कब्जा नहीं होने देना चाहते बल्कि इसे जनता की इच्छा के अनुसार चलाना चाहते हैं तो इसके मौजूदा माध्यम (केवल अंग्रेजी) को बदलना होगा और शीघ्र बदलना होगा।

कोई यह न सोचे कि मैं अंग्रेजी का सही महत्व नहीं जानता। मैं जानता हूं कि हम लोगों ने बहुत-सी बातें अंग्रेजी जबान के जरिये से सीखी हैं। मैं यह भी जानता हूं कि और भी कई बातें अभी हमें इस भाषा के जरिये से सीखनी हैं। इसने हमारे विचारों को उत्तेजित किया है। इसने हमारा पश्चिम के ज्ञान, कला, शिल्प, विचार और संस्कृति से परिचय कराया है। इसने हमें राजनीति और अर्थतंत्र की नई विधियां बताई हैं। हम इसके बहुत ऋणी हैं और इसका अभी और भी बहुत-सी बातों के लिए इस्तेमाल करना है क्योंकि शायद कुछ समय तक यह हमारे और पश्चिम के बीच सम्पर्क का एकमात्र जरिया बनी रहेगी। परन्तु जहां मैं यह जानता हूं वहीं मैं यह भी जानता हूं कि हमने इस देश में अंग्रेजी जाननेवालों की एक जो नई जाति बना दी है, उसने दूसरी जातियों की तरह ही अनजाने ही अपने स्वार्थ लिए यह कोशिश की है कि जो फायदा उसे मिल रहा है, वह उसी तक सीमित रहे।

निरस्त्रीकरण, शान्ति और सहयोग

दुनिया आज आन्तरिक और बाहरी झगड़ों से परेशान है। हरएक आदमी के अन्दर सही मूल्यों की तलाश में एक संघर्ष चल रहा है और हर देश में पुरानी परम्पराओं और प्रथाओं का विरोध है। अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र के संघर्ष और तनाव को, जिसके कारण आज सारी मानवता पीड़ित है, केवल ज्ञान, सहनशीलता और सद्भाव को बढ़ाकर और यह भावना फैला कर ही खत्म किया जा सकता है कि सारे इंसान एक जैसे हैं।

इसमें कोई शक नहीं है कि यदि आदमी को और उसकी सभ्यता को इस धरती पर जीवित रहना है तो उसे अपने भविष्य का नक्शा बहुत सावधानी से बनाना होगा। इस सनसनी के जमाने में, जबकि आदमी अन्तरिक्ष में जा रहा है, यह बड़े ही दुर्भाग्य की बात होगी कि आदमी अपनी ही बेवकूफी से अपने को खतम कर दे। इंसानियत की भलाई इसी

मे है कि आदमी अपने साधनो को बरबादी से बचाए, अपनी जनसख्या को नियन्त्रित करे, गरीबो और अमीरो के बीच, चाहे देश हों या व्यक्ति, जो खाई है उसे पाटे और अपने पड़ोसियो के साथ मेल और शाति से रहना सीखे।

यह दुख की बात है कि दो भयानक महायुद्धों के बावजूद भी परमाणु हथियारो का लगातार निर्माण अपनी भयानक छाया सारे ससार पर डाले है। यही नही, दुनिया के कई हिस्सों मे आज भी अत्याचार का राज है। इस जमाने मे भी, जबकि आदमी सितारो पर पहुंचने ही वाला है, उसने भाईचारे से रहना नही सीखा है और संसार के साथ हैवानियत को नही छोड़ पाया है।

यदि परमाणु शक्ति वाले राष्ट्र यह चाहते हैं कि दूसरे देश परमाणु शस्त्रो को बनाने की होड़ से दूर रहें तो उन्हे भी इन हथियारों की होड़ रोकनी होगी। हमारी सरकार इस बात के लिए भरपूर प्रयत्न कर रही है कि सारा ससार इस सिद्धात को मान ले। हमारे देश का कहना है कि परमाणु शस्त्रो के फैलाव को रोकने का मूल उद्देश्य, अन्तर्राष्ट्रीय सुरक्षा है, और यह सुरक्षा खतरे के मूल कारणों को मिटाए बगैर नही हो सकती। जहा तक कि परमाणु शक्ति रहित राष्ट्रो का सम्बन्ध है, उनकी सुरक्षा किसी भी प्रकार की परमाणु शस्त्र की गारण्टी से नही हो सकती, यह केवल परमाणु निरस्त्रीकरण से ही सम्भव है।

विज्ञान और तकनीक ने अपनी आश्चर्यजनक प्रगति से मानव के हाथ मे ऐसे साधन दे दिए हैं जो पृथ्वी को स्वर्ग बना सकते हैं या मानव सभ्यता का सर्वनाश कर सकते हैं। जब तक कि ये नैतिक और सामाजिक नियन्त्रण मे नही रखे जाते, मनुष्य को शाति नही मिल सकती, बल्कि मनुष्य का मन तब तक भय और घृणा से भरा रहेगा। आधुनिक तकनीकी ज्ञान का उपयोग मनुष्य की दशा सुधारने में करना होगा, जिससे कि उसकी वास्तविक आवश्यकताओं की पूर्ति हो सके और शोषणविहीन, सहकारी तथा सहयोगी समाज स्थापित हो सके।

राष्ट्रीयता की भावना मे कोई बुराई नही है; बुराई है संकीर्णता, स्वार्थ और पृथकता मे जो आधुनिक राष्ट्रो को ग्रसे हुए है। भारत राष्ट्र ने, मुझे विश्वास है, दूसरा ही मार्ग अपनाया है। यह अपना विकास इस ढग से करना चाहता है जिससे सारी मानवता की सेवा या भलाई हो।

जीवन दर्शन

दोस्तो, जिंदगी केवल शब्दों का जाल नहीं। इसका ताना बाना दुख और सुख नही, बल्कि उन्नति और अवनति है। नफा-नुकसान नही, बल्कि आत्मज्ञान और आत्मत्याग है, स्वार्थ और दूसरो को दबाना नही, सेवा और त्याग है। जीवन का नाम सदा ऊंचे उद्देश्यों के लिए काम करना है। जिन्दगी एक मिशन है, सेवा है, पूजा है। जीवन

मन्दिर के योग्य पुजारी बनने के लिए आपको लगातार कड़ी मेहनत करनी है, जिससे कि वह सारी योग्यता और क्षमता जो कुदरत ने आपको दी है, पूरी तरह विकसित हो।

जीवन के इन ऊंचे मूल्यों को हासिल करने के लिए हमें सारी जिन्दगी को ऊंचा उठाना होगा। इसके टुकड़े नहीं किए जा सकते। कहीं व्यापार, कहीं मुनाफाखोरी, कहीं दिखावा, कहीं निर्दयता, कहीं अतिशय दया, कहीं गलत कामों में ताकत और हुनर लगाना और कहीं अच्छे काम के लिए योग्यता का अभाव। इससे जिन्दगी ऊंची नहीं उठ सकती।

धैर्य और लगन से ही आदमी उत्कृष्टता प्राप्त करता है। वह उत्कृष्टता जो कि आदमी के काम का ईश्वर के रचनात्मक कार्य से मेल मिलाती है।

दूसरे के अधीन रहने वाली जिन्दगी तंग होती है, आदमी ऐसी घृणित जिन्दगी में घुटता रहता है। स्वतन्त्रता की जिन्दगी विस्तृत होती है और इसमें इच्छानुकूल चुनाव के लिए काफी गुंजाइश होती है।

जो लोग विनाश करने का अधिकार मांगते हैं, उन्हें निर्माण करने की इच्छा और क्षमता भी अवश्य दिखलानी चाहिए।

असली धर्म आदमियों को आपस में मिलाता है। यह उन्हें कभी अलग नहीं कर सकता। जो लोग सच्ची धार्मिक प्रवृत्ति के हैं, वे अपने चारों ओर शांति, सौहार्द व एकता फैलाते हैं।

लोकतन्त्र में सभी समस्याएं राजनीतिक समस्याएं बन जाती हैं और राजनीति तथा धर्म का मेल जरा कम ही बैठता है। राजनीति बाहरी समस्याओं से सम्बन्ध रखती है, जबकि धर्म आत्मिक समस्याओं से। राजनीति सफलता को सबसे ऊंचा मानती है और धर्म संतुष्टि को। आधुनिक काल में एक समझौता कर लिया गया है कि धर्म अपनी सीमा में रहे और अगर यह राजनीति में दखल न दे तो इसके मामले में भी दखलन्दाजी नहीं की जाती।

दुनिया को देख कर हम यह समझ बैठे हैं कि अगर हम और हमारा समाज वांछित चीजें पा लेते हैं, तो बाकी किसी बात से हमें कोई वास्ता नहीं। हम इस बात को सोच कर बड़े खुश होते हैं कि हमारे यहां विश्वविद्यालय हैं, विद्वान हैं, पुस्तकालय हैं, और हम आगे बढ़ रहे हैं। अपने ज्ञान के गर्व में हम इन बातों को ध्यान योग्य नहीं मानते कि क्या आत्मा है, क्या मृत्यु के बाद कोई जीवन है, क्या जिन्दगी का कोई मतलब है ?

कानून का अंकुश केवल व्यक्तियों पर ही नहीं बल्कि सरकार पर भी रहना चाहिए ··· संविधान के विपरीत कानून नहीं बनने चाहिए और सरकार को संविधान या कानून के खिलाफ कार्रवाई नहीं करनी चाहिए। कानून शासन व शासित दोनों पर लागू होता है।

सिद्धांतवादी का सबसे बड़ा सिद्धांत सत्य, कल्पनाशील व्यक्ति का सौन्दर्य, धार्मिक व्यक्ति की मुक्ति, शक्तिवान का शासन, आर्थिक व्यक्ति का लाभ और सामाजिक व्यक्ति का प्रेम, हमदर्दी और एक दूसरे का ख्याल है।

महान कलाकारों का सम्मान करके हम स्वयं अपना सम्मान करते हैं। सदाचार की तरह कला भी खुद के संतोष के लिए है। शायद इसे किसी बाहरी मान की जरूरत नहीं होती।

कला को केवल समकालीन युग को ही प्रतिबिम्बित नहीं करना चाहिए बल्कि सामाजिक परिवर्तन के एक औजार के रूप में काम करना चाहिए। राष्ट्रीय एकता को बढ़ाने के लिए संगीत, नाटक और नृत्य से बेहतर कोई जरिया नहीं हो सकता। ये कलाएं लोगों को एक दूसरे के पास लाने और एक दूसरे को समझने में सहायता देती हैं।

इन पत्थरों से अधिक कीमती कौन जवाहरात हो सकते हैं। ये न किसी को धोखा देते हैं और न किसी की शिकायत करते हैं। इनका न कोई दुश्मन होता और न ये कोई अधिकार जताते हैं। न ये अपनी असलियत किसी से छिपाते हैं और न किसी दूसरे का कोई भेद खोलते हैं।